सुख-साधन पुस्तकमाला—पुष्प छठा

[redacted]फलता के तीन साधन
श्रम, पुरुषार्थ
[redacted]र सेवा

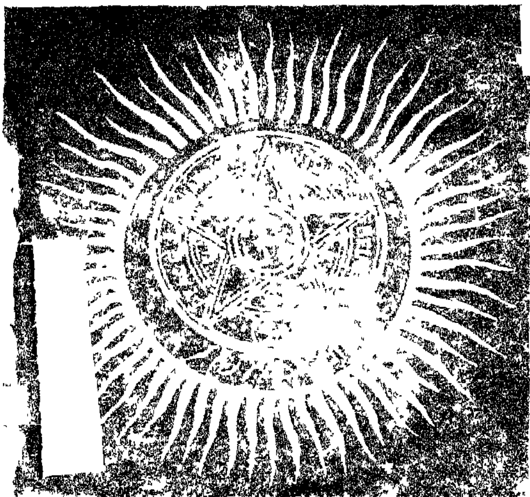


प्रकाशकः—
कुंवर मोतीलाल रांका अर्जीनवीस
मैनेजरः— सुख-साधन भण्डार
छतरी महादेवजी, ब्यावर (राज.)



मुद्रक:—
मनोहर प्रिंटिंग वर्क्स, इन्दौर
(केवल पृष्ठ १ से ६४ तक जिनेश प्रेस में छपे हैं

इस पुस्तक में वर्णित साधनों से



साधक को सुख-शांति-समृद्धि प्राप्त हो।

मुन्शी केसरीमलजी गांका



प्रकाशक के पूज्य पिता श्री

* ॐ *

जीवन सफलता के तीन साधन

मन्त्र

अरहन्त सिद्धाचार्य पाठक साधु लोकोत्तम सदा,
नाम स्मरण से कर्म वैरी कांपते हैं सर्वदा।
जिस मन्त्र में इनके मनोहर नाम हो आये सभी,
उसकी महत्ता भी भला क्या कथित हो सकती कभी?

सत्य

यदि एक दिन भी जगत में हो सत्य का दर्शन नहीं,
तो हो प्रलय जड़ जीव का न मिले ठिकाना भी कहीं।
होगा जहां पर सत्य बस अमरत्व भी होगा वहां,
पाया नहीं यदि सत्य तो अमरत्व मिल सकता कहां?

पुरुषार्थ

यदि दैव भी प्रतिकूल है तो भी न पुरुषार्थी डरें।
अपने सहायक आप वे सम्भव असम्भव को करें॥
पुरुषार्थी को विघ्न क्या साहाय्य क्या दिनरात क्या।
वे दैव के भी दैव हैं दुर्दैव की फिर बात क्या?

मन्त्र

नमोकार सन्मंत्र मुक्ति का अनुपम कारण।
जन्म जरा मरणादि कर्म कृत रोग निवारण ॥
यह अशरण्य शरण्य, त्रस्त जन त्रास निवारक।
भव समुद्र में पडे अखिल जन का उद्धारक ॥
इस महा मन्त्र के नाम से, महा नीच भी तर गये।
यह विद्युत पाके जगत के बीच उजेला कर गये ॥

सत्य

अवलम्बन यह कौन जगत किस पर ठहरा है?
अणु २ में भी किस पदार्थ का तेज भरा है?
योगी किसके लिए योग बन में करते हैं?
किस बल से मुनिराज कर्म का बल हरते हैं?
पापपूर्ण संसार में पुण्य चमकता है कहां?
सब का उत्तर 'सत्य' है, सत्सुख का कारण यहां?

पुरुषार्थ

कर्म क्षेत्र में तुम्हें वीरता दिखलाना है,
देकर के सर्वस्व विजय लक्ष्मी पाना है।
जो पुरुषार्थी बने वही विजयी बन जाता,

कायरजन क्या कभी विजयलक्ष्मी है पाता?

यदि पुरुष जन्म तुमको मिला,
तो कुछ पुरुषार्थ करो।
यदि मरना है तो हृदय को,
सन्मुख रख के मरो॥

मन्त्र (त्राटक छन्द)

जीवनका सद्ध्येय और आदर्श न हमको मिल पाया।
इसीलिए बीते अनन्त भव, भव का अन्त नहीं आया॥
मिला हमें आदर्श मंत्र जब श्री सद्गुरु ने बतलाया।
किंकर्त्तव्य विमूढ जीव ने नवजीवन सत्पथ पाया।

सत्य

जंगल में मंगल होता है सिंह गाय बन जाता है।
परम शत्रुओं के विशालदल का भी सिर झुकजाता है॥
मिथ्यावाद समूह आपसे आप मृत्यु पा जाता है।
वहां असम्भव भी सम्भव है जहां 'सत्य' आजाता है॥

पुरुषार्थ

पुरुषार्थी का कोष विलक्षण विज्ञ भी जिसको पाले।
जिसके भीतर कहीं असम्भव आदिक शब्द नहीं आते॥

होती है कर जोड़ सफलता मूर्तिमती उसके आगे।
मिला जहां पुरुषार्थी कोई विघ्न प्रलोभन सब भागे॥

मन्त्र

पढ़ी पुस्तकें बहुत मगर
मिल सका न मुझको सम्यग्ज्ञान।
नाना आसन लगा २ कर
ध्यान किया पर लगा न ध्यान॥
दुनिया भर के मन्त्र जपे पर
हुई नहीं दुखों की हानि।
जपता णमोकार यदि मैं तो
मिलती ज्ञान ध्यान सुख खानि॥

सत्य

झूठ बोल कर जगत जीतने चला बना पूरा मक्कार।
खाली हाथ रहा जीवनभर मिला सिर्फ मुझको धिक्कार
मृत्यु समय पर सुनी हृदय में मैंने एक सत्य झंकार।
खुद हो ठगा गया रे मूरख! मिली करारी तुझको हार॥

पुरुषार्थ

जब मुझसे हो सका न कुछ भी,

देने लगा दैव को दोष ।
मैं बा[illegible] कर सका न कुछ भी,
किया जगत पर निष्फल रोष ॥
यदि करता पुरुषार्थ दैव को
नाक चने चबवाता आज ।
पुरुषार्थी के लिये दैव भी
सज्जित रखता सारे काज ॥

नवकार

मन्त्र के प्रभाव से जो अन्तर्दशा प्राप्त होती है वह निजानन्द अथवा स्वरूपानन्द ही है। ऐसे आत्मानन्द में रमता हुआ मैं स्वयं को देखता हूं। अहाहा! ऐसे असीम आनन्द का आन्दोलन कौन न चाहे? ऐसे परमानन्द मे मग्न पुरुष अपने आस-पास के वातावरण को प्रेममय— आकर्षक बना देता है। ऐसी मनः सिद्धि प्राप्त करने के लिये "नवकार" ही महामन्त्र और औषध है।

सत्य

वचन सिद्धि वाला जगत वन्दनीय महात्मा के सदृश हो जाता है, अतः इसके लिए अनेक पुरुष घोर तपश्चर्या किया करते हैं, परन्तु जो मनुष्य सोते जागते एवं अत्यन्त विपन्नावस्था में भी झूठ नहीं बोलता, वही निःसंदेह वचन सिद्धि को प्राप्त होता है।

पुरुषार्थ

किं नाम रोदिषि सखे ! त्वयि सर्व शक्तिः
आमन्त्रयस्व भगवन् । भगदं स्वरूपं ।
त्रैलोक्यमेतदखिलं तव पादमूले ।
आत्मैव हि प्रभवते, न जडः कदाचित् ॥

हे मित्र ! तू क्यों रोता है। तेरे में तो सर्व-शक्ति है। उसी आत्मशक्ति का आह्वान कर। (शीघ्र ही त्रैलोक्य तुम्हारे चरण में नत हो जायगा। आत्मा ही सब कुछ कर सकता है—जड़ से कुछ होने वाला नहीं।

मात्र इतना ही—कि हमेशा प्रातः स्टेन्डर्ड ५॥ बजे उठकर केवल ५ मिनट तक नवकार

मन्त्र को मन में जपो। एक ही समय में एक ही मंत्र के आह्वान करने का अलौकिक प्रभाव होगा। एकत्र, एक ही प्रकार के स्वर के लिए नवकार के आगे पीछे कोई शब्द न लगाकर केवल ५ पद ही उच्चारण करने चाहिये। (फिर जो भाई ६ पद उच्चारण करना चाहें वे भले ही करें)।

दोपहर को बारह बजे ५ बार वचन सिद्धि का ध्यान कर जाओ। रात के ९ बजे पुरुषार्थ का श्लोक ३ बार पढ कर मनन कर जाओ।

महाशय ! कारण न पूछकर, केवल १ मास तक उपरोक्त बातों का श्रद्धा के साथ ध्यान करो। पीछे हम आप से बात करेंगे।

मन्त्र

सांसारिक विभूतियों में घिरे रहने पर भी जो उनमें रंजित नहीं होता है। और अन्य पुरुषों को भी उनसे निर्लेप रहने के लिए उपदेश करता है तथा समय आने पर संसार से विरक्त

होकर परम कल्याणकारी जैनेन्द्री दीक्षा को धारण करता है और मोक्ष रमणी को वरण करता है। ऐसी अनुपम पदवी भी जब नवकार मन्त्र से मिल जाती है तो फिर सांसारिक विभूतियां अनायास ही मिल जावें इसमें आश्चर्य क्या है?

सत्य

गाथा—बहुंच खलु पावकम्म, पगडं सच्चंसि धिति कुव्वह।

एत्थोवरए मेहावी, सव्वं पापकम्मं झोसई॥

हे भव्य! अनादि काल से मैं पापकर्म करता आया हूँ। यह जानकर जो तू उनसे विरक्त होना चाहता हो और आत्मा से लगे हुए कर्मों को ध्वंस करना चाहता हो तो मन, तन, धन और प्राणपण से भी धैर्य रख कर सत्य का ही आश्रय ले। सत्य ही परम तेज है। सत्य ही महान बल है, सत्य ही परम धर्म है और सत्य ही अक्षय धन है। ऐसा निश्चय करके सत्य-पालन

के लिये तेरे में जितना धैर्य हो उससे भी अधिक धैर्य तू रख। मन, वचन और कार्य से सर्वदा सत्य में तत्पर बुद्धिमान पुरुष ही अपने कर्मों को नष्ट करके परमपद को प्राप्त होते हैं।

पुरुषार्थ

अपने चचल मन को स्थिर करके, मैं अनन्त शक्ति का धारक हूँ, इस भावना को हृदय में को दृढ कर, पीछे शान्ति शय्या पर निश्चित होकर सोजा। तेरी अन्तर्भूत अनन्त शक्ति स्वयं स्फुरयमान होगी और प्रतिदिन तुम्हारा उत्साह सदैव वृद्धिगत होता जायगा और सफलता तुम्हारी सदैव निश्चित रहेगी।

खूब याद रखना चाहिये कि प्रातःकाल के नवकार मन्त्र, दोपहर के सत्य के मन्त्र तथा सायंकाज के पुरुषार्थ के मन्त्रों को दृष्टि समक्ष रखकर एवं उनके तत्व बोधामृत का पान करके आत्मा को उज्वल करना इसी उद्देश्य से मन्त्र यहां उद्धृत किये जाते हैं।

मन्त्र

दुनिया में कोई व्यक्ति होगया हो या विद्यमान हो चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, अंग्रेज हो या फारसी, किसी भी जाति या देश का हो, किसी भी भेष में हो, परन्तु जिन्होंने तत्वार्थ को यथार्थ समझ कर काम क्रोध, मान माया, और लोभ को जीत लिया है तथा जो सर्वथा निरीह होगये हैं उन सबका नवकार मंत्र में समावेश होता है और मन्त्र का जाप करने से उनको भी नमस्कार हो जाता है। इस प्रकार की विशाल दृष्टि से धर्म के मूलभूत इस नवकार मन्त्र के समान अन्य कोई भी मन्त्र दृष्टिगोचर नहीं हुआ है।

सत्य

सत्य कहने से तुम अपने समय के बहुभाग को बचा लेते हो। समय ही अमूल्य धन है। सत्य कथन से तुम प्रत्येक मनुष्य को अपना मित्र बनाते हो क्योंकि सत्य में एक ऐसी असा-

धारण आकर्षण शक्ति अन्तर्हित रहती है, और मित्रता और प्रेमभाव से ही यह संसार सुखमय बन जाता है। सत्य ही विश्वासपात्र बनने का मुख्य साधन है। गरीब से गरीब मनुष्य को भी उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाला सत्य को छोड़कर अन्य कोई प्रबल साधन नहीं है।

पुरुषार्थ

घोर रात्रियां व्यतीत हो जाती हैं संकटों एवं विघ्न परम्पराओं को धैर्य के साथ विजय प्राप्त करने वाले पुरुष ही आनन्द का सच्चा लाभ लेते हैं। दुःख भोगे बिना सुख का सच्चा स्वाद नहीं मालूम पड़ता है। दुःख ही सुख को विशेष रसिक बनाता है। इसलिए दुःखों को भूल जाओ और सुख में ही विहार करने के तुम स्वप्न देखो।

मन्त्र

यह अध्यात्म शास्त्र का रहस्य है। मन्त्र यह मनुष्य का आध्यात्मिक जीवन है। मन्त्र;

आध्यात्मिक साधन का बीज है। मन्त्र का यथार्थ अनुष्ठान मनुष्य को संसार सागर से पार कर देता है। तथा इष्ट देवता की प्राप्ति कराता है। मन्त्र चित्त शुद्धि करता है, सात्विक बल की वृद्धि करता है, अविद्या तथा अहंकार का ह्रास करता है तथा चित्तवृत्ति को वश में कर देता है।

मैं योगावस्था, सन्यासावस्था, रोगावस्था या भोगावस्था में से चाहे कैसी भी अवस्था में होऊँ, यदि न होऊँ तो चाहे उसका ढोंग ही करता होऊँ, उसकी हँसी उड़ाता होऊँ, या मैं श्रीमंत दिखाई देता होऊँ अथवा महान् विद्वान तरीके से पूजा जाता होऊँ अथवा चाहे कैसी भी ब्रह्मवस्था हो, क्या उसको भेद करके तुम मेरे पास नहीं आ सकते? तुम्हारे रहने योग्य मन्दिर बनाना क्या तुम्हारा कर्त्तव्य नहीं है। तुम्हारा काम हो या न हो, उसके साथ मेरा कुछ संबंध नहीं है। अपना काम आप करो। मुझे तो केवल

मंत्र का रटन करना है।

सत्य

"पुरिसा सच्चमेव समभिजाणाहि सच्चस्साणाए से उवट्ठिए से मेहावी मार तरति सहिते धम्ममादायसेयं समणुपस्सति"।

हे पुरुषो! सत्य को अच्छी तरह समझो। उसके नियमों का पालन करो। जो मनुष्य सत्य के नियमों का पालन करता है वही मृत्यु को जीत करके अक्षय मोक्षपद को प्राप्त होता है।

निन्दा, आरोप, ईर्षा आदि के कारण प्रामाणिक पुरुष कभी सत्य से विचलित नहीं होता है और उसके बदले में अपशब्द भी व्यवहृत नहीं करता है। अपने को निरपराध तथा दूसरे का दोष सिद्ध करके अपमानित करने की उसे कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ती है।

पुरुषार्थ

बाहिर से आने वाले विचारों के सभी द्वार

बन्द कर; और आन्तरिक आत्मिक शक्ति के दरवाजे को खोल। शान्ति का अनुभव कर और दिन रात को आनन्द से व्यतीत कर! प्रामाणिक मनुष्य अशुभ वस्तुओं को भी शुभ स्वरूप में बदल देता है।

नवकार-मन्त्र

त्रिलोक में लोग तुझे बड़े भक्ति-भाव से पूजते हैं। अप्सरायें तथा देव भी तेरी प्रभावना के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हे प्रभो! तो भी तुझे कोई प्राप्त नहीं करता है—इसमें दोष किस का है? तू सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है और हम लोग मोह जाल में फँसे हुए हैं, इसीलिये तुम्हारे बनाये हुए नियमों पर चलने में असक्षम हैं—इसमें हमारा क्या दोष है?

हां! दोष इतना ही है कि अनेक मत मतान्तरों के कारण हम सब तेरा स्मरण करना भूल गए हैं। अब हमें बोध हुआ है और अब से क्षण के लिए भी मैं तुझे बिसराऊंगा नहीं। पीछे तेरा काम तू करना। अपना काम तू कर या न कर

इसको देखने की मुझे तनिक भी जरूरत नहीं है।

महामन्त्र "नवकार" सब शास्त्रों का सार है, उसमें जगत के पवित्र पुरुषों को नमस्कार किया गया है। विशुद्ध चित्त होकर अनुष्ठान पूर्वक उसका आराधन करने से मनोकामना पूर्ण होती है—आत्मा विशुद्ध बन जाता है। तथा अनन्त ज्ञान, अनन्त चरित्र, और अनन्त वीर्य का भोक्ता बन जाता है और अन्त में अवि-नश्वर सुख को प्राप्त करता है।

गेहूँ बोने वाले को फसल पर गेहूँ के साथ साथ जैसे भूसा अनायास ही मिल जाता है। उसी तरह से इस मन्त्र के आराधन से पारलौ-किक विभूतियां भी स्वयं ही मिल जाती हैं।

सत्य

धन, अधिकार, यश, मित्रता, वैभव आदि भले ही चले जावें। सत्य के लिए मैं इन सब को सहर्ष छोड़ने को तैयार हूँ, परन्तु सत्य; हे सत्य

तू मुझे मत छोड़ना और मैं भी तुझे किसी भी दशा में त्याग नहीं करूंगा।

पुरुषार्थ

मन! तुझे भी बहुत थका दिया है। शरीर! तेरे अंगो को मैंने शिथिल कर डाला है। बुद्धि! तुझको मैंने बहुत भ्रमाया है, अब तुम सभी आराम लो और मुझे अपने स्थान शान्तिसागर में जाने दो; क्योंकि रात्रि होने पर सभी अपने २ घर जाते हैं। प्रातः पुनः अवश्य मिलेंगे, ऐसा समझकर आनन्द में मग्न होजा!

नवकार (प्रातः काल का मन्त्र)

हमें तो नवकार मय होना है। अपने चारों तरफ़ घर में या बाहर सर्वत्र ही नवकार के ही अक्षर दृष्टिगत होने चाहिए। शरीर के प्रत्येक रोमकूप से उसकी ही ध्वनि निकालनी चाहिए। इसके लिए किसी भी प्रकार की बुद्धि या जोश (आवेश) की जरूरत नहीं है। हमें तो तन्मय होना है। हमारे आवेश में भी नवकार ही झलक

प्रस्फुरित होनी चाहिए। अन्य किसी दूसरी शक्ति की कोई जरुरत नहीं है। शक्ति के जितने द्वार हैं उन सब के मूल में तो हमारे नवकार का वास होजाना चाहिए। किसी भी अन्य सहायता की जरुरत नहीं है। हमारा नवकार से कभी वियोग न होना चाहिए। हित,माया,प्रीति, कुटुम्ब वात्सल्य आदि किसी की भी मुझे चाह नहीं है क्योंकि हमारे नवकार मन्त्र के प्रभाव से हमारी सभी आकांक्षाएं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रूप में परिवर्तित हो जावेंगी। जिन्हें संकल्प विकल्प करने हों, तर्क वितर्क करने हों अथवा जिन्हें दशों दिशाओं में अपनी ही बुद्धि की पराकाष्ठा बताना हो, अनेक प्रकार का प्रखर पांडित्य बताना हो, अनेक प्रकार के वाद विवाद करने हों वे भले ही करें, भले ही उसमें आनन्द लेवें भले ही अपनी स्पर्धा में विजयी दिखाई देवें, लोकमान्य बन जावें, कीर्तिशाली महात्मा की तरह पूजे जावें, उससे हमें कुछ सम्बन्ध नहीं,

मेरा तो यही ध्येय है और मुझे अपने इसी उद्देश्य की तरफ प्रगति करनी है इसीलिए मुझे उधर ही संलग्न हो जाने दो।

'सत्य (मध्यान्ह का मन्त्र)'

सत्य प्रकाश है, ज्योति है। क्रम २ से उसके ऊपर का मैल दूर हो जाता है, आवरण हट जाते हैं और वस्तु याथात्म्य प्रखरता से चमकने लगता है। हां ऐसा होने में समय तो लगता है। वर्षे व्यतीत हो जाती हैं। परन्तु यदि तुझे दिव्य शक्ति सम्पन्न होना है तो धैर्य रखकर आगे बढ़ और ज्योतिर्मय हो। जिस तरह तेल बिन्दु कितने ही अधिक पानी में क्यों न डाल दिया जावे हमेशा ऊपर ही तैरता है-ठीक यही बात सत्य की भी है। अनेक तरह के लाञ्छान, अपवाद, निन्दा आदि फैलाने पर भी सत्य बात छिपी नहीं रह सकती है।

'पुरुषार्थ (सोते समय का मन्त्र)'

अनेक जंजाल आते और चले जाते हैं। त-

निक अपना भूतकाल तो देखो: न मालूम कितनी २ घोर आपत्तियों को तुमने पार किया है, बड़ी२ बीमारियां भोगी हैं बड़े २ संयोग वियोग हुए हैं। आज उन बातों को पुनः याद करने से कुछ आनन्द सा आता है उन्हीं को देख और आनन्द से सोजा।

मन्त्र

बिच्छु उतारने मनुष्य या स्त्री को वशीभूत करने भूत-पिशाचनी के सिद्ध करने या किसी धनवान को वश कर लेने का यह मन्त्र नहीं है। यह मन्त्र तो परम पवित्र है, दिव्य है और अनुपम है। संसार की बड़ी से बड़ी आपत्ति का नाश करने वाला है - अनन्त सुख का पैदा करने वाला है, ऐहिक और पारलौकिक सिद्धियों का दातार है। सांसारिक अनन्त दुखों क्लेशों, चिन्ताओं, आधिव्याधियों तथा अनिष्टों का नाश इस "नवकार" मन्त्र से ही होता है इसीलिए सब तरह के अनिष्टों को दूर करने

वाले और सम्पूर्ण विभूतियों के मूलभूत इस नवकार का स्मरण करो।

‘ सत्य ’

भ्रान्त मनुष्यों को दूर से तो सत्य मार्ग अत्यन्त विकट कंटकाकीर्ण तथा हानिकर ज्ञात होता है तथा असत्य का मार्ग सरल तथा हितकर मालूम पड़ता है - परन्तु एक बार निश्चल धैर्य एवं दृढ़ निश्चय से सत्य मार्ग पर चले जाने के पीछे यह भ्रान्ति मिट जाती है और सत्य का मार्ग ही परम सरल निर्भय, शान्तिमय तथा पग २ पर दिव्य मालूम पड़ता जाता है।

‘ पुरुषार्थ ’

यदि चिंतन करना, ध्यान करना, प्रायः चिन्ता स्वरूप में परिणत हो जावें तो इस बात को रोकने की शक्ति को जागृत कर और तेरे में जितना बल हो उसको चिन्ता निराकरण में लगा। निश्चिन्त हो जाने से तू स्वयं सानन्द रहेगा यह आनन्द ही सार है और आनन्द मय

निद्रा से तेरा वही बल क्रमशः वृद्धिगत होता जायगा।

'मन्त्र'

कुञ्जी:—यह कुञ्जी घड़ी को लगाने की नहीं है, तिजोरी या आलमारी में लगाने की नहीं है: यह कुञ्जी अलौकिक और अद्वितीय है। कुञ्जी का नाम ढूंगढने को आप उद्यत हुए होंगे? परिश्रम मत लो, नाम दूर नहीं है, दुर्गम किंवा दुःसाध्य भी नहीं है; नाम सरल एवं अर्थप्रपूर है, बतलाये देता हूँ कि इस चाबी का नाम है:—

'श्री नवकार मन्त्र'

इस मन्त्र द्वारा यदि हृदय मन्दिर को अहर्निश विकसित प्रफुल्लित एवं पावन किया जावे तो ऐसे हृदय का जगत में पूजा होवे। घर २ में ऐसे हृदय मन्दिर हो यही अभिलाषा है।

'सत्य'

न्याय मन्दिर में न्यायासन पर बैठे हुए न्यायाधीश में जितना न्याय और सत्य का पक्ष

होता है उतना ही सत्य एवं न्याय-प्रेम प्रत्येक जैन में होना चाहिए।

'सत्य'

हम जो कुछ बोलें वह कपट रहित सत्य एवं स्पष्ट होना चाहिए। जिस वाक्य में सत्य और असत्य का मिश्रण होवे ऐसे वाक्यों से घोटाला होजाता है और वह पाप बीमारी एवं मृत्यु के मार्ग में आत्मा को घसीटता है।

असत्य रूपी सर्प के साथ कभी खेल नहीं करना चाहिए और अर्ध सत्य को अपनी भाषा में या जीवन व्यवहार में किंचित् मात्रा भी स्थान नहीं देना चाहिए। जो सत्य अपन जानते हैं वही मन, वचन और कर्म से जगत के समक्ष रक्खु करना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन सत्य के प्रकाश में ही प्रकाशित होता है, और वही सत्य को स्पष्ट रीत्या देख सकता है। सत्य को यथार्थ जानना यही सत्य की प्राप्ति का सच्चा मार्ग है और उसी से आत्मा का उद्धार या

निर्वाण की प्राप्ति होती है।

आध्यात्मिक शांति से सत्य का ज्ञान होना यह मोक्ष के प्रदेश में दृष्टि करने के समान है; यह प्रदेश ऐसा है कि जहां कुछ बढ़ता भी नहीं और घटता भी नहीं है।

जिस समय अपन जैसा बोलते हैं उस समय वैसे ही अभिप्राय अपने दिल में होवे तब अपने शब्दों में आध्यात्मिक बल आजाता है और जैसा आप न बोलते हैं वैसा ही अवश्य होता है।

'आनन्द'

जिस प्रकार अनन्त युग इस आत्मा पर से बीत गये उसी प्रकार यह समय भी बीत जायगा। चिन्ता और उद्वेग करने से कुछ लाभ नहीं है। अपना आत्मत्त्व किसी हालत में कभी नष्ट नहीं होता है, वह अचल सुखरूप है फिर उद्विग्न होने का क्या कारण है? आत्मा स्वरूप में स्थिर रहकर सुख दुःख को समभाव से सहन करते २ चित्त की प्रसन्नता को कभी मत छोड़ो। स्वे

जहां एक बार अपनी बात झूठी सिद्ध हुई कि बस- फिर वाणी में गौरव और दूसरों को विश्वास कभी होता ही नहीं है। उदाहरण के तौर पर समझो कि तुम अपनी कुछ बहुमूल्य वस्तुओं को एक बहुत बडे विद्वान श्रीमन्त सर्राफ की दुकान पर जमा कराने जाते हो- यदि इतने में ही तुम्हारा कोई हितैषी यह कहे कि भाई- वह व्यक्ति है तो श्रीमन्त, पर है झूठा। सोचो: तुम्हारे मन की क्या दशा होगी? तुम्हारा चीज धरने का संकल्प तो विलीन हो ही जायगा- पर साथ ही साथ में एक प्रकार का भय भी तुम्हें आ जावेगा। तुम उस मनुष्य को कभी सम्मान की दृष्टि से तो देखोगे ही नहीं- प्रत्युत तुम्हें उस से मिलते या बोलते हुए भी घृणा और हिचकिचाहट होगी।

दुनिया में जितने महात्मा होगये हैं, उन सब की जीवनी हमको यही शिक्षा देती है कि हमेशा सब दशाओं में सत्य पर दृढ़ रहो- सफलता तुम्हें

मिलेगी और फिर मिलेगी। सभी सम्प्रदायों के सभी शास्त्रों का केवल यही निचोड़ है कि "सत्यमेव जयते नानृतम्"।

आनन्द

सभी आत्माएँ स्वभावतः अनन्त आनन्द की स्वामिनी हैं। आत्मा का यह आनन्द गुण आत्मा को कभी किसी भी अवस्था में नहीं छोड़ता है। इस आत्मा ने अनन्तों भव धारण किये हैं। सभी भवों में यह आनन्द की मृग मरीचिका में दौड़ता रहा परन्तु असली आनन्द इसके हाथ कहीं लगा ही नहीं। जिस तरह किस्तूरी वाला मृग कस्तूरी की सुगन्धी से मस्त होकर उसकी प्राप्ति की आशा से इधर उधर भागता है, ठीक उसी तरह यह आत्मा अपने अन्तरंग को न खोजकर बाह्य पदार्थों में आनन्द ढूंढने के प्रयास करती रही और सुख के बदले इसे दुःख ही दुःख मिला। हे आत्मन्! अब बाह्य पदार्थों में सुख खोजने के वृथा प्रयास को छोड़; और अपनी आत्मा के

अक्षय कोष को तू देख ! जिस आनन्द के लिए तू विकल हो रहा है वह तो तेरे में ही असीम रूप में विद्यमान है । अपनी आत्मकपाटी (कोष) नवकार मन्त्र की अव्यर्थ चाबी से खोल और हमेशा के लिए असीम आनन्द में मग्न हो ।

मन्त्र

भजो या न भजो, जपो या न जपो, श्रद्धा रक्खो या न रक्खो, परन्तु अपने वास्तविक हित के चाहने वाले को कम से कम उसके प्रति प्रेम (रुचि)अवश्य पैदा करनी चाहिए । मन्त्र की रुचि पैदा होने के बाद चाहे जिस किसी काल में (उत्सर्पिणी हो या अवसर्पिणी), किसी भी युग में और प्रत्येक देश में, जहां धर्मप्रवर्तना होगा वह रुचिवाला व्यक्ति मन्त्र में ही तदाकार (तल्लीन) हो जायगा यह बात निःसंशय है क्योंकि मन्त्र तो सभी दशाओं, समयों और अवस्थाओं में अपना कार्य अवश्य २ करेगा ही ।

सत्य

सत्य दूसरों पर अपना प्रभाव डालने का प्रयास नहीं करता है। सत्य प्रिय दुनियां को अपनी तरफ आकृष्ट करने के लिए लालायित नहीं होता है परन्तु जन समूह ही स्वयं सत्य का दिव्य स्वरुप देखकर सत्यवक्ता की तरफ आनन्द से गद्गद होकर उस पर निछावर हो जाते हैं।

आनन्द

भले ही रात्रि का घोरतम अन्धकार जगती-तल पर छा जाय। भले ही अज्ञानी जीव आसुरी माया के वशीभूत हो जांय। भले ही नौजवान नवीन २ नाटक चेटकों में अथवा कर्ण मधुर आकर्षक संगीतों में लुभाय जावें, परन्तु मुझे तो केवल निद्रा वही निद्रा जो तन, मन, धन को शक्ति देती है: हां, वही मुझे पूर्ण आनन्द देगी।

मन्त्र का अर्थ क्या ?

मन्त्र शब्द (मन) विचार करने तथा (त्रा) रक्षण करने इन दो धातुओं से बना है अर्थात् मन्त्र विचार करने के साधनभूत मन का रक्षण

करता है। मन्त्र मन को अशुद्ध संस्कार से, अशुद्ध कल्पना से और अशुद्ध वासना से बचाता है।

मन्त्र पवित्र वस्तु का चिन्ह है। पवित्र भावनाओं से परिष्कृत मन्त्र ही मन्त्र कहलाता है और वही मन का रक्षण करता है। मन्त्र चैतन्य कैसे बन जाता है ? अथवा मन्त्र शक्ति कब सिद्ध होती है ? तभी; कि मन्त्र का जो अर्थ होता है उसको ध्यान में रखकर मन्त्र ही रटन का अभ्यास किया जाय और साधक की उस पर पूर्ण श्रद्धा हो। इस से क्या होता है कि मन्त्र की जप से पहिले अपने आस पास का वातावरण मन्त्रमय बन जाता है- पीछे मन्त्र सतत अभ्यास से वही घट बनता है और धीमे २ गोल चक्रकार से एकत्रित होते २ एक केन्द्र स्थान में आता है और वही अपनी बिखरी हुई शक्ति को एक केन्द्र में इकट्ठी करता है।

जिस तरह से आतिशी शीशा दूरवर्ती सूर्य की किरणों को अपने में एकत्रित करके लोहे को

भी गला देता है- ठीक वैसे ही अपनी बिखरी हुई शक्तियाँ एकत्रित होकर असम्भव कार्य को भी सम्भव बना देती हैं।

सत्य

ऐसा कौनसा मूर्ख होगा जो अपने अमूल्य समय को बनावटी बातों के बनाने में व्यतीत करे। बनावटी बातें अनेक भेद वाली तथा वितंडावर और परस्पर में भी भेद पैदा करा देने वाली होती हैं। शान्ति जो मनुष्य अवतार का ध्येय है- वह ऐसे अशान्ति के कामों में क्यों पड़े ?

आनन्द

घन्टों के पीछे घन्टे परतन्त्रता में व्यतीत किए। घर में भी मन को शान्ति नहीं मिली वह जैसे का तैसा अनेक जंजालों में बंधता और छुटता फिरा। इस दौड़ा फिरी से थके हुए मन से अच्छे २ कामों की आशा कैसे रक्खी जाय ? मन को थोड़ा आराम देने से आत्मा को शान्ति मिलेगी और वही मन को काम करने के लिए

विशुद्ध और पराक्रमी बनावेगी।

मन्त्र

प्रभु के प्रति क्या तुम्हारा प्रेम है ? क्या प्रभु-भक्ति तुम्हें रुचिकर लगती है ? यदि आत्मा के उद्धारकर्त्ता इन दोनों तत्वों के प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम होगा तो ही तुम महामन्त्र नवकार का माहात्म्य शीघ्र समझ सकोगे अथवा इसका रहस्य जानने का प्रयत्न करोगे और रहस्य समझने के बाद आस्था पूर्वक इसी की रटन लगाया करोगे और रहस्य समझने के बाद आस्था पूर्वक इसी की रटन लगाया करोगे तो इससे गुरु और प्रभु में तुम्हारी भक्ति और श्रद्धा दिन २ बढ़ती जायगी।

नवकार मन्त्र पर आस्था रखना प्रभु और गुरु पर आस्था रखना है।

सत्य

सब सद्गुणों को आकर्षित करने की अलौकिक शक्ति सत्य में निहित है। केवल एक राजा

को ही जीत लेने से जैसे उसका तमाम लश्कर, राज्य, ऋद्धि-सिद्धि, विभूति आदि जीत ली जाती हैं ठीक वैसे ही सत्यरूपी राजा को अपने हृदय में स्थापन करने से शेष सभी गुण स्वयं आ जाते हैं।

आनन्द

हे आत्मन् तू तो अत्यन्त बल का स्वामी है उसी बल का चिन्तवन कर। सांसारिक चिंताओं और मानसिक संक्लेशों में से विरक्त होकर अपनी स्वायत्त शांति को उपयोग कर। जो तेरे कर्त्तव्य हैं उनकी तरफ स्थिर धैर्य और निश्चल दृष्टि से आगे बढ। तू अपने उद्दिष्ट मार्ग पर चलता जा फिर देख कि सभी ऋद्धि सिद्धियां तेरे सम्मुख चेरी बनकर रहेंगी।

मन्त्र

यदि व्यवहार में तुम्हारी नेता बनने की अभिलाषा है और उस अभिलाषा को पूरी करके उसकी पूरी साधना करनी है; अथवा यदि

तुम्हारा बड़े उपाधिकारी, मन्त्री, अमात्य तथा करोड़पति सेठ बनने का खास उद्देश्य है और उसी की प्राप्ति के लिए अहर्निश तुम प्रयास करते हो और यह कहते हो कि पीछे धर्मध्यान करके कर्मों का नाश कर देंगे तो इसके लिये वस्तुतः तुम्हें एक साथी की जरूरत है। नहीं तो तुम्हारी पिछली बात कभी साध्य नहीं होगी और पहिली बात के उच्च शिखर पर पहुँचते ही वहां से एक दम गिर जाने का बड़ा भारी भय रहेगा। इसलिए उक्त दोनों बातों को सिद्ध करने के लिए 'नवकार' को अपना साथी बनाओ। एक बार परीक्षा कर देखो। प्रभावशालियों का तो यह आदरणीय मन्त्र है।

पुष्टिकारक पाक

इस शीत की ऋतु में श्रीमन्त लोग अपने शरीर को पुष्ट करने के लिए हीरा मोती अथवा चांदी सोने की भस्म डालकर विविध प्रकार के स्वादिष्ट पाक बनाकर खाते हैं परन्तु इस शरीर

को चलाने वाले आत्मा को पुष्टि देने वाले 'नवकार' मन्त्र रूपी अलौकिक अमृतरस का पान करने वाले सच्चे श्रीमन्त लाखों में एक भी मिलना मुश्किल है। चिन्तामणि रत्न से भी मूल्यवान होने पर भी बिना मूल्य और बिना परिश्रम के मिलते हुए इस अमृत को लोग पेट भर भरके क्यों नहीं पीते हैं? इसीलिए कि इसके स्वाद और गुण को उन लोगों ने कभी चखा या अनुभूत नहीं किया है।

सत्य

सत्य यह शाश्वत और सर्व व्यापक है। सूर्य तथा चन्द्रमा की भी तेजस्विता की अपेक्षा इसकी तेजस्विता अनन्त गुणी है। सत्य तपस्वियों का तेज है और योगियों का योग है। करोड़ों और अरबों रुपयों से भी इसका मूल्य अधिक है। एक सम्राट की अपेक्षा सत्यवादी का मान अधिक है। पवित्र पुरुष संसार सागर में से सत्य का शोधन करके अविनश्वर सुख को

पाते हैं। सत्य को पहिचानो हर एक प्रसंग पर उसी का शरण लो। केवल रास्ते में आते हुए असत्य रूपी कंटक को साहस से दूर करदो और विजय श्री को प्राप्त करो।

पुरुषार्थ

चार फुट की कोठरी में किवाड़ बन्द करके चाहे बैठो अथवा एक विशाल महल में अपनी शान के साथ दिखलाई दो; परन्तु जहां तक पुरुषार्थ नहीं किया है वहां तक आनन्द और अनुभव का रस मिले तो कैसे और क्यों कर ?

मन्त्र

जो तुम्हें वास्तविक सुखी होना हो; किन्तु उसकी प्राप्ति के लिए बड़े २ धर्मग्रन्थ पढ़ने और मनन करने का समय तुम्हारे पास न हो तो तुम केवल एक 'नवकार' महामन्त्र का ही जाप करो। जिस तरह समुद्र नदियों का एक समूह रूप है- वैसे ही 'नवकार' मन्त्र सर्व ही धर्मशास्त्रों का सार रूप है। जिस तरह दूध में दही और दही

में घृत विद्यमान रहता है उसी तरह 'नवकार' मन्त्र में सुगति और मुक्ति अन्तर्हित है। दही को फेरने से जैसे घी निकल आता है और छाछ अलग हो जाती है, वैसे ही 'नवकार' के स्मरण से अशुद्ध परणति दूर होकर शुद्ध चैतन्य की प्राप्ति होती है।

दही को नियमानुसार बिलौने से जैसे शीघ्र ही घृत निकल आता है वैसे ही गुरु आज्ञानुसार भली भांति स्वरूप समझ कर, श्रद्धायुक्त, यथार्थ रीति से नवकार का अनुष्ठान किया जावे तो सहज ही में शुद्ध चैतन्य मोक्षपद की प्राप्ति हो जाय।

सत्य

जहां २ धूम्र होता है वहां २ अग्नि अवश्य होती है। इसी तरह जहां सत्य होता है वहां नीति, उन्नति और विजय रहती है। यदि अपने घर की नींव मजबूत और गहरी हो तो वह बहुत दिनों तक खड़ा रह सकता है। इसी तरह से

अपने जीवन का मूल जो 'सत्य' यथार्थ रूप में हो तभी यह जीवन वास्तविक सुखमय और आदर्श रूप बन सकता है। सोने पर जैसे गिलट (कलई) करने की जरूरत नहीं, वैसे ही सत्य में किसी अन्य बात के मिश्रण करने की जरूरत नहीं है। परन्तु जैसे सोने के टुकड़े को ज्यों के त्यों कोई नहीं पहन सकता है वह अलंकार रूप बनकर ही शोभा देता है उसी तरह सत्य भी जब स्व-पर को आनन्दकारी हितकारी तथा यथार्थ हो तभी बोलने और आचरण करने योग्य होता है।

आनन्द

ज्वार भाटे में जैसे महासागर गम्भीर भाव से रहता है उसी तरह से सभी सांसारिक प्रवृत्तियों के बीच में गम्भीर भाव से आनन्दयुक्त निश्चल खड़ा रहा। जो आपत्तियाँ और मुश्किलें आवें तो भी उनमें आनन्द ही ले। धीरे २ वेही तेरे अनुकूल बन जायँगी और तेरी चेरी बनकर सेवा करेंगी।

मन्त्र

नवकार मन्त्र का प्रवाह तुम्हें अपनी लहर में बहाये ले जाता है या तुम स्वयं ही उसके प्रवाह में प्रवाहित होना चाहते हो ? प्रथम तुम्हें इच्छा करने की जरूरत है और पीछे स्मरण कर २ के प्रवाह उत्पन्न करने की जरूरत है पीछे देखो कि ऐहिक तथा पारलौकिक कौनसी ऋद्धि सिद्धि और शुभ गति तुम से दूर रह जाती है। इसमें किसी दूसरे की सहायता की कोई जरूरत नहीं है। तुम स्वयं ही स्वतंत्र हो।

सत्य

व्यवहारिक सत्य कभी २ आध्यात्मिक सत्य से एकदम भिन्न होता है तो भी वह सत्य आध्यात्मिक सत्य के मार्ग पर ही है। ऐसा समझ कर व्यावहारित सत्य को भी शीघ्र ही आचरण परिणत करो।

पुरुषार्थ

मैं निर्विकल्प हूँ। चैतन्य स्वरुप हूँ। मुझे

कोई दुःख नहीं दे सकता है। कोई मता नहीं सकता है। अतः इस जगत में मैं बिल्कुल निर्भय हूँ; थोडे समय तक इस बात का चिन्तवन कर और हृदय के गम्भीर भाग में प्रवेश कर। यही सत्य पुरुषार्थ है और वही आनन्द लहरियों में किलोल करता हुआ मनुष्य है।

नवकार एक भाई लिखते हैं कि "मैं 'नवकार' की जाप करता हूँ। धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करता हूं, व्रत और पंचक्खाण करता हूँ तथापि मेरा आत्मा व्यग्र रहता है", इसके जवाब में हमारी यही सलाह है कि एक सप्ताह के लिए अन्य प्रकार का अध्ययन बन्द रक्खो और नवकार की तरफ ही लक्ष्य दो। जब किसी को हानि पहुँचाने की तरफ प्रवृत्तियां होती हों- तो उसको नवकार के सख्त मनन द्वारा रोकने का प्रयास करो और फिर एक सप्ताह के बाद अनुभव को लिखना।

नवकार

नवकार को तुम हृदय के बीच बिन्दु में ले जाओ। तुम्हें निर्भयता प्राप्त होगी, तमाम चिन्तायें दूर हो जायगी नयाबल, नव्यजीवन, भव्य ज्ञान तुम्हें मिलेगा। यह तो सब तुम्हारे हाथ ही का काम है। किसी की सहायता का इसमें दरकार नहीं है।

सत्य

यह ठीक है या गलत- इन दो विचारों में मारा मारी मत करो छोटा या बड़ा जो व्यवहारिक सत्य कहलाता है उसको शीघ्र आचार परिणत करो। पीछे क्रमशः गूढ सत्य का मुख्य द्वार स्वयं खुलता जायगा।

पुरुषार्थ

प्रवृत्ति करते हुई भी वृत्ति को आत्माधीन रखना; यह सर्वोत्तम अवस्था है। यही सत्य पुरुषार्थ है और इसका अभ्यास करने वाला दूसरों को भी इसी मार्ग में ले जाने में परम

सफल होगा।

नवकार

नवकार मन्त्र के आराधन करने वाले पर बाह्य कोई भी प्रसंग अपनी छाप नहीं मार सकता है। साधारण मनुष्यों को मिलने वाले असंख्य विरोधी विचारों से उसका रक्षण होता है और उसके अभ्यास के परिपक्व होने पर उसके अन्तः करण में विक्षेप बहुत कम उठते हैं इस लिए उसको अपनी वृत्ति में परम शान्ति मिलती है।

सत्य

सत्य असत्य क्यों चिल्लाते हो ? इसका तर्क वितर्क क्यों करते हो ? नाहक वाद विवाद करके क्यों क्लेश में पड़ते हो ? पहिले यह तो सोचो कि जिसे तुम्हारा अन्तरात्मा सत्य कहता है उसे तुम कहां तक आचरण परिणित करते हो ? जो तुम उसे पूरी रीति से पालन करते हो, तो भले ही सत्य की खोज करो अन्यथा केवल वाद विवादों में अपने अमूल्य समय को वृथा बरबाद करके

सत्य को ढांकने की कुचेष्टा मत करो।

पुरुषार्थ

यावन्मात्र जगत को वशीभूत करने वाला पुरुषार्थ अपनी आत्मा को पूर्णतया सुखदायी कब हो सकता है; तभी और केवल तभी, जब कि वह जगत्मात्र को अपने में समाविष्ट करके भी स्वयं उसमें तनिक भी आसक्त नहीं होता है। वही पुरुषार्थ सच्चा है और इसी से आत्मा पूर्ण विकास को प्राप्त होती है।

नवकार

नवकार मन्त्र क्या २ कर सकता है, इस मन्त्र में कितनी प्रबलता है; नवकार मन्त्र के आराधन से ऐहिक सभी विभूतियां प्राप्त होकर अन्त में मोक्ष लक्ष्मी कैसे मिल जाती है, यदि उक्त सभी बातों का अनुभव हो तो जैसे कर्मयोगी हिन्दू "कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" को ही अपना धर्म समझता है उसी तरह से तुम भी फल और कर्म दोनों को नवकार को ही सौंप

दो और सच्ची श्रद्धा से इसके आराधन में संलग्न रहो।

सत्य

सत्य: वस्तु का यथात्म्य स्वरुप है- उसमें असत्य का सम्बन्ध या मिश्रण हो ही नहीं सकता है। यदि पदार्थ के यथात्म्य सत्य स्वरुप को ही सुनकर कोई क्रुद्ध होजाता हो- तो उस समय तुम्हारा यह कर्त्तव्य नहीं है कि तुम उसे प्रसन्न करने के लिए झूंठी मूंठी नई हकीकत बनाकर उपस्थित करो- परन्तु तुम्हारा कर्त्तव्य तो यह है कि तुम विनयवन्त बनकर उसके उस आक्रमण को सह जाओ। यदि तुमने सत्य नहीं छोड़ा है तो उसमें निश्चय से तुम्हारी विजय होगी।

पुरुषार्थ

हमारे पूर्व पुरुषा बड़े बुद्धिमान् विद्वान् और उन्नत थे, हमारा कुल बहुत उत्तम है; जब हमारा देश उन्नति के शिखर पर था उस समय आधुनिक सभ्य कहलाने वाली जातियां नंगी

जिन्नी थी। ऐसी बढ़ २ कर बातें मारने से ही तुम उन्नत नहीं कहला सकते हो। तुम्हारी उन्नति अवनति का क्रम तुम्हारी वर्तमान अवस्था से लगाया जायगा।

तुम आज उन्नत जातियों की प्रति द्वन्द्विता में अपने पुरुषार्थ द्वारा कितनी अधिक विजय प्राप्त करते हो। अपने बल से अपने स्वत्वों की कितनी रक्षा करते हो: ये सब बातें ही तुम्हारी उन्नति का परिचय देंगी।

तुम्हारा पुरुषार्थ ही तुम्हारी और तुम्हारे पूर्वजों की कीर्ति को सुरक्षित रख सकता है केवल बातों से न तो आज तक कोई बड़ा बना है और न बड़ा बन ही सकता है।

मन्त्र

यह महान मन्त्र भले ही एम.ए., बी.ए. एवं पाश्चात्य संकृति के अन्ध श्रद्धालुओं के हृदयों में शीघ्र न घुस सकता हो; परन्तु सत्य बात तो यह है कि यह विजयी मन्त्र बडे २ प्रोफेसरों

(आचार्यों), विद्वानों एवं दुनिया पर अपना आधिपत्य जमाने की इच्छा रखने वालों का तो प्यारा से प्यारा मन्त्र है। आपको अपने आनन्द के लिए, वैभव के लिए, या अपने प्रयोजन के लिए यदि कोई मन्त्र गिनना पड़े तो हमारी खास सलाह है कि इस अमृत मय मन्त्र का ही अपने हृदय पर तनिक देर के लिए सिंचन होने दीजिये इस थोड़ी देर के प्रसंग के बाद ही आपको अपने आप में एक अचिन्त्य परिवर्तन सा दिखाई पड़ेगा।

आपकी संस्कृति चाहे जैसी पाश्चात्य क्यों नहीं इस पवित्र मन्त्र का वह संसर्ग उस पाश्चात्य संस्कृति के दोष दूर कर देगा और उससे मिलने वाले कल्याण शुद्ध स्वरूप में आपको प्राप्त होंगे। अहा-हा! ऐसे विश्व विजयी-पवित्र मन्त्र का पूर्ण श्रद्धा भक्ति युक्त जाप करने के लिए कौन पुरुष लालायित न होगा? बाल एवं अज्ञानी पुरुष भी जब इसका मनन करके असीम आनन्द

प्राप्त करते हैं तो शिक्षा से पूर्ण तथा संस्कृत हुए मनुष्यों के आनन्द की तो सीमा ही क्या कही जा सकती है।

सत्य

संसार की सपाटी पर अनेक साम्राज्य उत्पन्न हुए और नष्ट होगये। अनेक बड़ी २ प्रबल शक्तियाँ स्थापित हुई और समय प्रवाह के साथ अनन्त में समा गई; अनेक चक्रवर्ती राजा महाराजा पैदा हुए, खूब चमके और अन्त में अनन्त के क्षितिज में ओझल हो गये; अनेक २ इतिहास लिखे गये और नष्ट भी हो गये--

कोई भी अवशिष्ट न बचा परन्तु फिर भी सत्य का साम्राज्य सत्ता, इतिहास, प्रभाव आदि अब भी ज्यों के त्यों विद्यमान् हैं। सत्य की सत्ता जगत स्वीकार करता है।

पुरुषार्थ

वस्तुतः सुख का महात्म्य दूसरे शब्दों में दुःख का गुणगान है; सुख का दिव्य प्रभात दुःख

की अंधियारी के आगमन का सूचक है और दुःखों की गाढ़ अन्धकार पूर्ण रात्रि सुखों के दिव्य प्रभात की जननी है।

दुःख और सुख का यह कैसा गाढ़ सम्बन्ध है। प्रकृति ने बिल्कुल भिन्न दो रूपों में अपनी आत्मा को कैसा छिपा दिया है--यह मज्ञ लोग नहीं समझते हैं इसलिये वे दुःखी होते हैं और पुरुषार्थी इस रहस्य को समझते हैं, इसलिए वे दुःख में भी सुख का असली आनन्द अनुभव करते हैं; और परम सुखी अवस्था में वे लक्ष्य च्युत न होकर परम शान्ति में मग्न रहते हैं।

वे खूब समझते हैं कि—

For things can never go badly wrong: If the heart be true and the love be Strong; For the mist, if it comes and the weeping rain, Will be changed by strength into sunshine again.

अर्थात्ः-यदि हृदय शुद्ध होने के साथ २ प्रेमी और पुरुषार्थी हो तो सांसारिक कोई कैसी भी परिस्थिति आत्मा पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। दुःखों की आंधियां और आपत्तियों की झड़ियां सत्य पुरुषार्थ द्वारा आत्मोद्धार के परम तेजोमय वातावरण में परिणत हो जाती हैं।

यह पुरुषार्थ का रहस्य है इसे तुम समझो।

मन्त्र

इस जन्म मृत्यु मय अनन्त संसार से पार उतरने का एक मात्र साधन सम्यक्त्व है। सच्चे देव, सच्चेशास्त्र, सच्चे गुरु में अविचल अवस्था रखना यही सम्यक्त्व है।

सच्चे देव में श्रद्धा रखना—इसका आशय यह है कि आत्मा सर्व प्रथम यह निश्चय करे कि मेरा चरमोन्नत आदर्श इस देव जैसा बन जाना ही है। उस देवत्व की प्राप्ति के उपाय जानने के लिए शास्त्रों में श्रद्धान करना चाहिए और उन उपायों को एक आत्मा किस तरह काम में

लाता है इसके उदाहरण गुरु महाराज होते हैं।

इसलिए शास्त्रकारों ने उपदेश दिया है कि भव्य जीव! जो तुझे मोक्ष ही की प्राप्ति करनी है तो तू सब उपाधियों से निवृत्त होकर ध्येय, ध्याता और ध्यान के इन मूर्तिमन्त उदाहरणों को सामने रख। यदि संसार की मन मोहकता में तू फँस जायगा तो जैसे गत अनन्त काल तक दुःख उठाया है वैसे ही अनन्त काल तक दुःख उठाता रहेगा।

मुमुक्षुः-भगवन् यह तो सब ठीक है परन्तु उक्त परमार्थों के दुर्धर मार्ग पर चलना ही अत्यन्त कठिन है, और मन अत्यन्त चंचल होने से इनमें लगता नहीं है। इसलिए आप कोई ऐसा सरल उपाय बताओ जिससे यह मन संसार की इन प्रवृत्तियों से विरक्त होकर ध्येय की तरफ संलग्न हो।

आचार्यः--वत्स! अनन्त अनादि से इस संसार में भ्रमते रहने और इस ध्येय को धारण न करने से

तुझे यह सब कुछ कठिन मालूम पड़ता है। परन्तु इसकी चिन्ता न कर। इस महामन्त्र नवकार की जाप कर। यह आत्मा १०८ प्रकार से अपने स्व-रुप से च्युत होता है इसलिए तू १०८ बार इस मन्त्र का स्मरण कर। गरुड़ का बार २ नामोच्चारण करने से जैसे सर्प का विष दूर होता है वैसे ही इस मन्त्र के प्रभाव से आत्मा का पतन रुक जाता है; ध्यान, ध्याता, ध्येय का बोध होता है और स्वात्मभूति होने से अन्त में मोक्ष को प्राप्ति होती है। इस तरह नवकार मन्त्र मोक्ष का परम्परा कारण है।

सत्य

बात यह है कि साधारण लोगों को सत्यांश का बोध नहीं होता। केवल नाम और रुप का ही ज्ञान होता है। मानो नाम-रुप ने ही सत्य को घेर कर छिपा रक्खा है। यह नाम-रुप अंश परिवर्तनशील है, इसका ध्वंस अवश्यंभावी है।

जब तक आप केवल इसी की ओर अपनी

दृष्टि को लगा रक्खेगा तब तक शोक, मोह, जन्म मृत्यु इत्यादि सांसारिक यातनाएँ दूर नहीं होंगी। क्योंकि जिसकी जैसी भावना होती है उसको सिद्धि भी वैसे ही होती है।

पुरुषार्थ

सज्जन और दुर्जन मनुष्य में सब से बड़ा अन्तर तो यही है कि दूसरे के उदय को देखकर जब सज्जन हर्षित होता है तब दुर्जन का हृदय जल भुनकर खाख हो जाता है। दुर्जन दूसरे के उदय को सहन नहीं कर सकता: वह अपनी कमी को दूर कर उसे उन्नत बनाने की चेष्टा नहीं करता प्रत्युत उस उन्नत व्यक्ति को भी जैसे बने तैसे नीचे गिराना चाहता है, और जब तक वह अपने प्रयास में सफल नहीं होजाता तब तक उसका हृदय जलता रहता है। दूसरी तरफ सज्जन अपनी भूल को दूर करता है और उस उन्नत व्यक्ति का आदर्श रख के अपनी उन्नति करता है। प्रयास दोनों ही करते हैं परन्तु उन

दोनों की प्रवृत्तियों से अच्छे और बुरे पुरुषार्थ की पहिचान हो जाती है।

मन्त्र

जब कभी मेरा मन पाप पथ में प्रयाण करता है तब मैं नवकार महामन्त्र का स्मरण करता हूं, उस समय उस मदोन्मत्त हाथी को सत्पथ में लाने में वह अंकुश का कार्य करता है।

सत्य

जिस प्रकार मनुष्य के साथ ही साथ उसकी छाया चलती है, उसी प्रकार सत्य के साथ ही साथ नीति, न्याय एवं धर्म भी चलता है। सत्य गया तो सब कुछ गया।

पुरुषार्थ

विघ्न परम्परा एवं अज्ञ पुरुषों का विरोध; सत्य पुरुषार्थी पुरुषों के लिए आशीर्वाद रूप उपकारक होते हैं।

मन्त्र

शिष्य (आचार्य) से—भगवन् आप इस महा-मन्त्र को मोक्ष का परम्परा कारण बताते हैं। नवकार मन्त्र तो कुछ अक्षरों का समूह है और मोक्ष आत्मा की अन्तिम अत्यान्तिक शुद्ध अवस्था है। आत्मा की इस परम दशा के साथ नवकार का जो यह सम्बन्ध है यह उसका आन्तरिक रहस्य आप दया कर प्रगट करो।

आचार्य-वत्स! यह तेरी शंका बहुत ठीक है। उसका उत्तर यह है। भगवान ने मोक्ष प्राप्ति का अव्यर्थ उपाय सम्यग्दर्शन को निरुपण किया है। सम्यग्दर्शन का अर्थ शुद्ध श्रद्धान करना है। यह श्रद्धान किस का? संसार में जीव एवं अजीव नाम के दो पदार्थ हैं। इन दोनों को इनके शुद्ध स्वरुप में श्रद्धान करना यही सम्यक्त्व है। आत्मा और शरीर को भिन्न २ समझना यही सम्यक्त्व है। आत्मा और कर्मों को अलग २ समझना यही सम्यक्त्व है। ऐसा दृढ़ निश्चय जिस आत्मा को एक बार हो चुका—

वह आत्मा मोक्ष का अधिकारी हो चुका परन्तु जो आत्माएँ स्वयं इतनी शक्तिशालिनी नहीं हैं कि वे स्वयं इस सम्यक्त्व को धारण कर सके-तो वे कम से कम उस आत्मा का आश्रय लें जिनमें सम्यक्त्व का पूर्ण विकास हो चुका हो।

जैसे कोई आदमी स्वयं लन्दन न जा सकता हो और वहां जाने की उसकी तीव्र अभिलाषा हो तो यदि वह लन्दन जाने वाले जहाज के केप्टन में विश्वास रखकर उस जहाज में मुसाफिरी करेगा तो एक दिन वह लन्दन जरूर जा पहुँचेगा। इसी तरह इस नवकार मन्त्र में उन पांच महापुरुषों का पुण्य स्मरण किया गया है जिनने मोक्ष पा लिया है या उसकी प्राप्ति के मार्ग पर हैं। जैसे केप्टन के बचनों में विश्वास कर यात्रा करने से लन्दन पहुँच जाते हैं वैसे ही इस नवकार का स्मरण करते २ आत्मा उतनी शुद्धि प्राप्त करता है कि जिससे मोक्ष प्राप्ति अत्यन्त सरल हो जाती है।

सत्य

संसार का एक अद्भुत [illegible] है। जिस मनुष्य के पास यह प्रकाश [illegible] उसे संसार एक तरह से अन्धकारमय हो दिखाई देता है और उसकी भूल भूलैयों में वह अपना मार्ग इतना भूल जाता है कि पीछे उसको अपने स्थान पर आजाना भी असम्भव हो जाता है। यदि संसार में निर्भय रूप से विचरना हो- तो केवल एक सत्य का आश्रय लो, सत्य से तुम्हारी आत्मा में शांति, निर्भयता और आनन्द पैदा होगा और जहां २ जाओगे वहां २ विजय तुम्हारे साथ रहेगी।

पुरुषार्थ

बुद्धिमान मनुष्य वही है प्राप्त साधनों का सदुपयोग करता है। वैसे तो प्रत्येक वस्तु का सदुपयोग एवं दुरुपयोग किया जा सकता है। एक तलवार है उससे अपना रक्षण भी होता है और दूसरे उससे किसी का घात भी होता है। बुद्धिमान उस वस्तु का सदुपयोग करके स्वयं

सुखी होता है और दूसरों को सुखी बनाता है। परन्तु दुर्बुद्धि मनुष्य स्वभावतः उस वस्तु के दुरुपयोग की तरफ आकृष्ट होते हैं जिससे उन का जीवन तो व्यर्थ जाता ही है परन्तु साथ ही साथ अन्य जनता को भी वे कुमार्ग में प्रेरित कर उसे भी दुःखी बनाते हैं।

मन्त्र

जीवन सबको प्यारा है, इसीलिए तो सब कोई इसे स्थिर एवं अक्षय बनाने की इच्छा करते हैं परन्तु लोगों की यह इच्छा पूर्ण कहां होती है? और जिस तरह वे प्रयास करते हैं उस तरह तो पूर्ण हो भी नहीं सकती। क्यों? जब तक जीवन की अक्षयता का सच्चा रहस्य न समझा जायगा तब तक अक्षयता की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस अक्षयता का लक्ष्य सब से अच्छी तरह यह मन्त्र बताता है। इसीलिए तो इसको महामन्त्र कहते हैं। यदि तुम्हें जीवन प्यारा है और तुम चाहते हो कि तुम्हारी आत्मा जीवन का अक्षय

सुख भोगे तो इस महामन्त्र की रटन, मनन और धुन लगाओ, मन्त्र की इस रटन, मनन और धुन से जो अलौकिक आनन्द मिलता है वही भावी अनन्त जीवन के अक्षय सुख का द्योतक है।

सत्य

Let the suprime object of your meditation be truth.

कोई भी काम करो; कैसी भी दशा में हो और कहीं भी क्यों न रहो, सदैव ही सत्य का आश्रय लो, सत्य तुम्हारे कार्य को सरल बनावेगा, दुःखद दशा को सुखद एवं निष्कंटक बनावेगा। विश्वास रक्खो कि सभी तरह की सफलताओं का निवास सत्य में है। केवल एक सत्य का आश्रय लो और देखो कि तमाम जगत तुम्हारा मित्र बनकर तुम्हारी सफलता के लिए कैसा तैयार रहता है। यदि तुम धन, कीर्ति, सम्मान, सफलता, मैत्री एवं आत्म शांति चाहते हो तो इस सत्य रुपी चिन्तामणि को अपने हृदय

में विराजमान करो। इस चिन्तामणि को धारण करने से जगत की विभूतियां अनायास ही मिल जाती है यही नहीं परन्तु परभव में भी उत्तम सुख की प्राप्ति होती है। क्यों कि सत्य इस लोक और परलोक के सुखों को पुल की तरह से संयुक्त कर देता है।

पुरुषार्थ

Who makes quick use of moment is a genius of Prudence.

जो कोई मनुष्य अपने प्रतिक्षण का उत्तम लाभ लेता है; वही बुद्धिमान है। हमारा आपका जीवन क्षणों का बना हुआ है। जितने २ क्षण निकलते जाते हैं उतनी ही हमारी आयु कम होती जाती है। इसलिए जो मनुष्य प्रत्येक समय का पूर्ण रूप से लाभ उठाता है वही बुद्धिमान है, दूरदर्शी है और जीवन को सार्थक करने वाला है। यदि इस विनाशीक छोटे से जीवन से अविनाशी एवं स्थायी सुख पाना हो तो एक भी क्षण

व्यर्थ मत खोओ, आलस्य को छोड़कर पुरुषार्थ में लगे रहो और लक्ष्य सिद्धि करो।

मन्त्र

पर्वत में से बहते हुए निर्मल झरने का जल पीने से थोड़ी देर के लिए मन एवं शरीर की थकावट उतर जाती है, उत्साह मिलता है और नवीन शक्ति का संचार होता है परन्तु इस महा मन्त्र का आराधन करने से निराशों को आशा, नव्य प्रेरणा और अलौकिक आनन्द मिलता है। मन्त्र तो इस दुनियां में विलक्षण शक्ति है, आशा के लिए तो संजीवन बूटी है और अमर जीवन बनाने वाला अमिय झरना है। जिस तरह अन्धेरी काल कोठरी में पड़े हुए जवाहिरात स्वयं में प्रकाश होने पर भी प्रकाशित नहीं हो पाते उसी तरह जब तक आत्मा में मन्त्र का प्रभाव नहीं पड़ता तब तक उसके गुणों का विकाश नहीं होता परन्तु ज्यों ही मन्त्र रुपी अलौकिक प्रकाश का उसमें प्रवेश होता है त्यों ही आत्म समुद्र की

अनन्त निधियां अपने २ पूर्ण स्वरूप में चमकने लगती हैं। आत्मा के गुणों को प्रकटाने के सबसे सरल किन्तु अव्यर्थ कारण इस महामन्त्र का बारम्बार ध्यान करो।

सत्य

जगत भर में तात्विक सत्य तो केवल एक ही है और वह है यह स्वयं। इसी का दूसरा नाम अहिंसा है। सत्य एवं प्रेम अनन्त है, इनको अपूर्ण मनुष्य कभी भी पूर्ण रूप से नहीं जान सकता। फिर भी कुछ आवश्यक बाह्य सत्य को तो हर कोई जानता है। इसको पूर्ण रूप से कार्य परिणत करने में हम बार बार गिरेंगे और पड़ेंगे। अनेक बार भारी भूलें भी हम से होंगी ही; परन्तु मनुष्य स्वभावतः आत्म नियंत्रित प्राणी है और आत्मनियंत्रण का अर्थ यह भी होता है कि जितनी बार भूलें हों उतने ही बार उनको सुधारने का अधिकार करने वाले को है और जितना सुधारने का है उतना ही भूल करने का भी अधि-

कार है । भूलों का क्रम चालू रहेगा परन्तु उसमें हमें सत्य एवं आत्म शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए । सत्य के कारण भूलों में कमी होगी और आत्मशुद्धि से की हुई भूलों की निर्जरा होगी । परमात्म दशा पाने में सत्य महान से महान एक बड़ा कारण है ।

पुरुषार्थ

उन्नति का इच्छुक मनुष्य तमाम दिन काम में लगा रहे । प्रतिदिन उठकर उस दिन के योग्य कर्तव्य का निश्चय करे और सोने के पहिले अपनी तमाम कार्यावलि पर ध्यान पूर्वक विचार करे, कितना हुआ—कितना बचा ? यदि यथेष्ट कार्य न हो सका हो तो इसके लिए हतोत्साह होने की जरुरत नहीं है, परन्तु पहिले दिन की कसर दूसरे दिन और भी अधिक उत्साह द्वारा पूरी की जाय तथा और दृढ़ निश्चय किया जाय । जो २ बातें अनुभव से कल विघ्न रुप सिद्ध हुई हों उन्हें आज दूर करें । अपने ऊपर ऐसी कड़ी

दृष्टि रखने से कामों में स्पष्टता आती है और सफलता पाने के नये २ मार्गों के उपाय मिल जाते हैं। आत्म श्रद्धा बढ़ती है। इच्छा करने से आत्मोन्नति में एक कदम और आगे बढ़ता है परन्तु इच्छा या विचार स्वयं कोई काम नहीं है, काम तो करने में है। जिस बल को मनोरथ या विचार बनाने में व्यय किया जाता है उसका प्रयोग यदि कार्य करने में किया जाय तो सफलता दूर न रहे। पुरुषार्थ प्रथम आवश्यक वस्तु है। पुरुषार्थी पुरुष दुनियां की कौनसी विभूति प्राप्त नहीं कर सकता ?

मन्त्र

Know Thyself. (सब से पहिले तू अपने आपको जान)

दुनियां के समस्त धर्मों में पारस्परिक गहरा मत विरोध होने पर भी इस विषय में तो सब महात्माओं की एक ही सम्मति है कि "यदि सच्ची आत्म शांति चाहिए तो बाहर को सब

उपाधियों को छोड़कर आत्म आत्मध्यान में मग्न हो। आत्मा की शान्ति सजीव है इसलिए वह अजीव (चेतन रहित) पदार्थों में नहीं मिल सकती। जिस तरह लाख यत्न करने पर भी बालू में से तेल नहीं निकल सकता, उसी तरह से यदि सांसारिक तमाम पदार्थ एक साथ मिल जाय फिर भी आत्मिक शान्ति ना उनसे मिल नहीं सकती क्यों कि शान्ति देने की शक्ति उनमें मूल से ही नहीं है। इसलिए सद्गुरु बार २ उपदेश करते हैं कि तू बाह्य पदार्थों को छोड़कर अपनी अन्तरात्मा का ध्यान कर। जगत को जानने की कोशिश मत कर परन्तु तू अपने आपको जान। अपने आपको जानने का यही प्रयास तुझे सब पदार्थों का जानने वाला 'केवली' बनावेगा। यह सातिशय आत्म-प्राप्ति आत्म-लब्धि का का अव्यर्थ उपाय यह मन्त्र है।

सत्य

यदि तुम्हें अपनी सच्ची उन्नति करनी हो तो केवल सत्य को ही पूर्णतया ग्रहण करो। (To get on get right) सीधा रास्ता और सत्य मार्ग दोनों एक ही बात हैं। सीधे मार्ग पर चलने वाला ही दूसरों से आगे बढ़ सकता है। सत्य पथ से भ्रष्ट होकर बिना सिर-पैर की पग-डंडियों पर जाने वाला कहीं न कहीं जरूर मार्ग भूल जाता है; इधर-उधर भटकता फिरता है; चलते २ थक जाता है; निराश हो जाता है तो भी सत्य मार्ग पर न होने से बहुत समय तक अपने उद्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुँच पाता है। यदि उन्नति करनी है तो आगे बढ़ो। यदि तुम कि कर्तव्य-विमूढ़ बने रहोगे और व्यर्थ सोच-विचार में ही पड़े रहोगे तो दूसरे अपने आप तुम से आगे निकल जायेंगे।

अतः "सर्वं त्यज सत्यमेकं भज" इस जीवन-सूत्र को आगे रख कर निर्भीक भाव से आगे बढ़ते

जाओ। सत्य पर आरूढ़ रहो। व्यर्थ अपनी या दूसरों की उन्नति पर समीक्षा करने में समय मत खोओ। यह जीवन संग्राम है। यहां मुड़ कर पीछे देखने या ठहर कर विश्राम लेने का काम नहीं—बस सत्य मत छोड़ो और मत छोड़ो अपना कर्तव्य। मैदान पार कर लेने पर देखोगे कि तमाम सफलताएँ—ऋद्धि-सिद्धियें एवं ऐहिक सुख सभी—तुम्हारे पास आ रहे हैं।

उन्नति करने का सच्चा और सीधा मार्ग सत्य है।

पुरुषार्थ

जो तुम्हें अपना उदय (विकाश) करना हो तो सब से प्रथम समतल में आ जाओ। जिससे नीचे पड़े न रहो। सूर्य जब तक समुद्र के समतल में नहीं आता है तब तक किसी को दिखाई नहीं देता है। दीखने के पीछे ही उसका क्रमशः विकाश होता जाता है। इस अविनश्वर दृष्टान्त का

अनुकरण करो। मात्र मध्याह्न के सूर्य मत बनो, जिससे दूसरे लोगों को क्लेश हो और स्वयं अपने आपको भी गिरना पड़े। इसलिये तुम्हारा उदय जहां तक दूसरे मनुष्यों की सुख-शान्ति में विघ्न-कारक न हो—वहां तक निर्भीक रह कर अपनी शक्ति बढ़ाते जाओ। कोई तुम्हारा विरोध नहीं करेगा, कोई तुम्हें हानि नहीं पहुंचावेगा।

अनन्त शक्तिवान हमारी आत्मा सूर्य से किसी भी तरह से कम नहीं है। जहां त्रास नहीं है वहां अस्त तो कोई चीज़ ही नहीं है।

मन्त्र

'नवकार' मन्त्र एक ऐसी स्टीमर है जो कभी भी समुद्र में छिपी हुई चट्टानों से टकराती नहीं है। जो असामान्य तूफानों के आने पर भी पथ-भ्रष्ट या दिशा भूल नहीं करती है; इतना ही नहीं, किन्तु बाहिरी तूफान तो उसे और भी बलिष्ठ बनाते हैं। इस स्टीमर में बैठे हुए मनुष्यों का जी कभी

मिचलाता नहीं है, क्योंकि यह स्टीमर बिना डगमगाये ही समान गति से चलता है। साधारण स्टीमर में जिन बैठने वालों को जी मिचलाने की, तूफान लगने की, चक्कर आने की आशंका रहती है वे इस 'नवकार' मन्त्र रूपी नाव में बैठें क्योंकि स्टीमर में केबिन की खुली हवा में बैठने से जैसे समुद्री हवा यात्री पर कुछ भी असर नहीं कर सकती है वैसे ही 'नवकार' रूपी नाव में बैठे हुए भव्यात्मा पर सांसारिक बाह्य कोई भी कारण कैसा भी असर नहीं डाल सकता है।

सांसारिक विषयों में रहने पर भी 'नवकार' मन्त्र उनके दुष्प्रभाव से आत्मा को बचायेगा, यहाँ सुख-शान्ति और वैभववान बनावेगा और क्रमशः यह 'नवकार' मन्त्र मोक्ष की प्राप्ति की योग्यता प्राप्त करा देगा। निश्चय रक्खो कि ऐहिक एवं पार-लौकिक सर्वोत्तम ऋद्धि-सिद्धियों को प्राप्त करने का सरलतम यदि कोई साधन है तो वह है एक

'नवकार' मन्त्र। इसलिये इसे क्षणभर के लिये भी मत विसारो।

सत्य

सत्य को आश्रय करने वाले दूर से देखने वालों को यद्यपि दुःखी से दिखाई देते हैं, दूसरे लोग उनकी निन्दा करते हैं, वह सहयोगियों से कभी २ पीछे रह जाते हैं, लोग उनकी हँसी उड़ाते हैं, उनको कभी २ घृणा की दृष्टि से देखते हैं और सभा सोसाइटियों में उन्हें बहिष्कृत किया जाता है ये सभी बातें दिन प्रतिदिन देखने में आती हैं। जैसे सोने को शुद्ध बनाने के लिए उसको पुनः २ अग्नि में तपाया जाता है, उस पर हथोड़ों की चोट लगाई जाती है, ठीक इसी तरह सच्चरित्रवान होने के लिए उक्त प्रकार के कष्ट लेने और उन्हें सहर्ष सह जाने की खास जरूरत है। अग्नि में पुनः २ तपाये जाने और हथोड़ों की पुनः २ चोट खाने के बाद जैसे सोने का आभूषण सब के चित्त को आकर्षित

करता है उसी तरह से सत्यवान पुरुष अपने विरोधियों तक के गले के प्रिय-हार बन जाते हैं। जनता उन्हें अपना प्रिय नेता, प्रभु, भगवान पीछे से समझने लगती है। उनके पीछे अपना सर्वस्व अर्पण करने को तैयार हो जाती है इसलिए यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि दुनिया तुम पर प्रेम करे, तुम्हारा सब पर प्रभाव पड़े तो सब बातों को छोड़ कर **केवल एक सत्य का पालन करो। अपने ऊपर आने वाले संकटों को सहर्ष सह जाओ। एक दिन ऐसा आवेगा जब कि तुम्हारा अभीष्ट यथेष्टरीत्या सफल होगा।**

पुरुषार्थ

एक मोटरकार हजारों नगरों की सैर कर सकती है; हजारों-लाखों मील दौड़ सकती है, अनेक प्रकार के वातावरणों को पार कर सकती

है, क्योंकि उसमें दौड़ने की शक्ति विद्यमान है। परन्तु जरा सोचो कि यदि उस मोटर में चलाने वाला ड्राइवर (driver) नहीं; तो क्या वह मोटर कुछ आगे बढ़ सकती है? नहीं, कदापि नहीं। इसी प्रकार आत्मा की अनन्त शक्ति की, अथवा अपने पुरुषार्थ की लम्बी-चौड़ी प्रशंसा करना एवं हजारों श्लोकों में सरस स्तुति पाठ गाना यह तो केवल अपनी रालस राइस मोटरकार की मात्र प्रशंसा करने के बराबर है। हजारों रुपयों की चटकीली-भड़कीली मोटर-कार जैसे चलाये बिना बेकार है उसी प्रकार अपनी आत्मा की अनन्त-शक्ति यदि काम में नहीं ली गई तो सर्वथा बेकार है। इसलिए उठो, प्रमाद छोड़ो और पुरुषार्थ में संलग्न होओ। (don't Indent Do) कोरी इच्छायें और अभिलापायें मत करो, कुछ कर दिखाओ। तमाम दिवस सच्चा पुरुषार्थ करो और रात्रि में सोने के पहिले उन्हें अतीत की झोली में समर्पण कर दो। इससे तुम्हें दूसरे दिन

सत्पुरुषार्थ सम्पन्न करने में विशेष उत्तेजन मिलेगा।

मंत्र

यह महा-मन्त्र केवल उस X-Ray (एक्स-रे अर्थात् रायन जन) किरण के समान ही नहीं है जो केवल तुम्हारे अन्तरंग शरीर का चित्र प्रकट कर देता है और केवल तुम्हारे रोग दोष आदि को छोड़ कर कुछ बता न सके। परन्तु यह महा-मन्त्र तो एक ऐसी अलौकिक X-Ray है जो अन्तरंग का सब कुछ गुण-दोष बता कर उनके इलाज के लिये स्वयं एक अचूक महौषधि है। यह आत्मा के साथ लगे हुये अनन्त अशुभ कर्मों को जड़मूल से क्षण भर में नष्ट कर देता है और फिर कर्मों को आत्मा से लगने नहीं देता है। जब कर्म ही न रहेंगे तो दुःख भी क्योंकर होगा? यदि कभी कर्मों का विपाक बहुत तीव्र आजावे और थोड़ा बहुत दुःख भी उठाना पड़े तो कभी घबराना नहीं; हमेशा चित्त में यही सोचना कि शूली का दुःख

इस तुच्छ सुई के दुःख के रूप में निकला जाता है। इस प्रकार की समझ पैदा करने के लिये 'नवकार' मन्त्र ही निश्चय से महान से महान महा-मन्त्र है। इसके अवलम्बन से बाह्य सांसारिक कैसा भी दुःख-सुख अन्तरंग आत्मा पर कुछ भी असर न डाल सकेगा। प्रत्युत अन्तरंग आत्मिक गुण सभी अपनी यथार्थ दशा में इस आत्मा के प्रत्यक्ष हो जायेंगे। ऐसी अद्भुत एवं अलौकिक X-Ray (एक्स-रे) रूपी 'नवकार' मन्त्र को स्मरण करके यावज्जीवन आत्म-शुद्धि करें कर्मरूपी रोग का नाश करें और अपनी चिरंतन शान्ति उपभोग करें। यह 'नवकार' महा-मन्त्र रूपी X-Ray तुम्हारे हाथ में है। इसका यथोचित उपयोग कर अपने आवागमन रूप रोग का नाश करो और अपने अन्तरंग अनन्त चतुष्ठयादिक गुणों का साक्षात करो। अहा हा! 'नवकार' मन्त्र रूपी X-Ray कैसी दिव्य और चमत्कारिणी है इसलिये इसे पल-भर के लिये मत बिसारो।

सत्य

Kill time and you kill your career अर्थात् समय का अपव्यय सफल-जीवन की बरबादी के समान है। सफल-जीवन अर्थात् उच्च अथवा महान-जीवन सब चाहते हैं परन्तु समय का अपव्यय करने में कोई तनिक भी कुंठित नहीं होता है। पांच मिनट में सत्य से जितना काम होता है उतना ही झूठ से होने में दिन के दिन लग जाते हैं तो अब सफल जीवन बनाने के लिये सब से अधिक क्या चाहिये? सत्य, केवल सत्य। वास्तव में सत्य अपना और अपने साथ रहने वाले प्राणि-मात्र का कल्याण करता है। जीवन की सफलता सत्य से सरलता से प्राप्त हो जाती है फिर क्या जरूरत है कि दुनिया के बाह्य आडम्बरों में फँसा जाय?—सर्वं त्यज—सत्यमेकं भज—का सिद्धान्त रक्खो फिर देखो कि कितने कम झगड़े होते हैं। सत्य भी खूब बच

जाता है और हृदय में सन्तोष भी खूब रहता है। ग्राहक भी सन्तुष्ट, देनदार भी संतुष्ट, सब कोई संतुष्ट ही संतुष्ट-तो फिर संतुष्ट के इस अमोघ मन्त्र को छोड़ कर अन्य उपाय क्यों चाहिये? बस सत्य का आश्रय लो और सब को संतुष्ट करते हुये अपना जीवन सफल बनाओ!

पुरुषार्थ

लोग कहते हैं कि तलवार से भी कलम अधिक बलवान है, यह बात ठीक है परन्तु यदि यह कलम भी चलाई न जावे तो इसका बल भी कुछ कर नहीं सकता है। इसी तरह से आत्मा में अनन्त-बल हो, शक्ति हो, विद्या हो, लक्ष्मी हो और विविध प्रकार के जौहर भरे पड़े हों, तो भी यदि उन से कुछ काम न लिया जावे तो वे सब रत्न भी नहीं होने के समान निरर्थक हैं। इसलिए अपने लिये, समाज के लिए, अपने देश के लिये केवल पुरुषार्थ ही सार पदार्थ है।

मंत्र

यह महा-मन्त्र मात्र अक्षरें जैसा ही नहीं है। परन्तु अपनी प्रतिकृति अपने सामने खड़ी करता है। अपना गुण दोष बता कर दूसरा कुछ नहीं कर सकता, किन्तु अशुभ कर्मों की अकसीर दवाई है। जो अशुभ कर्म की खोज करके जड़ मूल से नष्ट करता है। वैसे कर्म आने ही नहीं देता। इस लिये दुःख आने की सम्भावना ही कैसे हो सकती है। अगर निकाचित कर्म बंधन किया हो तो थोड़ा दुःख भोगना पड़े मगर इससे घबराने की कोई जरूरत नहीं है। शूली का दुःख कांटे से रफा हो जाता है ऐसा समझना। निश्चय से यह नवकार महा-मन्त्र जगत् में बड़ा भारी अवलम्बन है।

सत्य

Kill time and you kill your career. समय की बरबादी यानि उच्च जीवन की बरबादी। उच्च जीवन वही साफल्य-जीवन की

सभी इच्छा करते हैं किन्तु समय की वृथा बरबादी करते हैं। सत्य से जो कार्य पाँच मिनिट में होता है वह काम दिन पर दिन चले जायें तो भी असत्य से न होगा। तो अपनी जिन्दगी सफल करने में कौनसा रास्ता लेना उचित है ? सत्य का, क्योंकि यह अपना और अपने साथ रहने वाले आदमी का कल्याण करता है।

पुरुषार्थ

ऐसा कहा जाता है कि तलवार से कलम बलवान है किन्तु वह अगर नहीं चलाई जाय तो उसका बल कुछ नहीं कर सकता। इसी तरह से अपने पास जो कुछ हो शक्ति हो, विद्या हो, लक्ष्मी हो, व्यय न करे तो हो न हो बराबर है। इसलिये अपने लिये, अपने कुटुम्ब के लिये, देश के लिये पुरुषार्थ ही उत्तम है।

इस पुरुषार्थ के कार्य-क्रम रात्रि को सोते समय भूल जाना यह परम पुरुषार्थ है।

मंत्र

यह अखिल वंदनीय मंत्र दृष्टि के सामने रक्खो, नजर से अंकित करो, बुद्धि का वेग रोक कर इस महा-मन्त्र का प्रवाह चलने दो, जैन २ और जैन के नाम से पुकारने वाले, जैन-संघ की एक्यता, जैन-संघ का प्रभाव और जैन-संघ के धुरन्धरों की सद्‌बुद्धि के लिए 'नवकार' महा-मन्त्र की छाया में बैठिये। इस अमृत-तुल्य लहर में सावधान हो और अपने आपको पहिचान कर कर्म-क्षेत्र में बहोर पड़ो, यही सत्य है। निश्चय से कहते हैं यही आपको मुसीबतों से बाहर निकालेगा, झगड़े का अन्त होगा, विजय वांवटा फरकावेगा और महावीर की विजय गर्जना से आकाश को पूरित करेगा।

सत्य

जहां तक आपने मुख-रूप दर्पण को सत्य बोल कर साफ नहीं किया है वहां तक आपके

मुख-रूप दर्पण में दूसरे का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ेगा। यदि दूसरे के लिये सच्चा विचार बांधना हो तो पहिले अपने मुख-रूप दर्पण को सत्य से साफ रक्खो और ऐसा न कर सको तो मौन धारण करो, वृथा असत्य बोलने में कर्म-बन्धन होगा और दुश्मन ज्यादा हो जावेंगे।

पुरुषार्थ

प्रत्येक आदमी बहुत करके इस विचार के जरूर होते हैं कि अन्य लोग हमको मान देवें, पूजें और बड़ा मानें, किन्तु यह कैसे हो सकता है? लाखों आदमियों में मान देने वाली, पूजने वाली और बड़ा मानने वाली समाज योग्य आदमी कैसे खोजती है? इसका विचार करने वाले मनुष्य को जन-समाज की सपाटी से जरा आगे बढ़ना चाहिये। तभी समाज की नजर उनके ऊपर पड़ती है। जन-समाज के व्यवहार बुद्धि और कार्य से आगे बढ़ें फिर कीर्ति विजय-

माला पहनावेगी। किन्तु यह पुरुषार्थ के बिना अशक्य है। पुरुषार्थ ही इच्छित वस्तु को देने वाला है। आदमियों में कुछ पुरुषार्थ तो जरूर ही चाहिये, अन्यथा वह आदमी ही नहीं।

उठो! संसार में आगे बढ़ने का प्रयत्न करो।

मंत्र

कोई भी नया कार्य करना हो, नई योजनाएं तैयार करनी हो, या किसी मुशीबत से पार होना हो, तो मगज को शान्त करके एक ध्यान रखने की जरूरत है। शान्त मगज कैसे हो सकता है? शान्त शब्दों का आन्दोलन हृदय में करने से, शान्त में शान्त शब्द कौन से हैं? साधु, अगर साधु शब्द से ही शान्ति का वातावरण खड़ा होता है तो फिर सिद्धपद प्राप्त हुए साधुओं का जिस में समावेश होता है, इस से अन्य शान्ति के लिये क्या वाँछना हो सकती है? सब उसके नीचे है।

सत्य

इस महान् प्रयोग का उपयोग करो। कुछ मुशीबत आवे, उसकी फिक्र नहीं करना, लक्ष्मी प्राप्त करना सहज है क्या ? पढ़ना सहज है क्या ? कीर्ति सम्पादन करना सरल है ! यह तीनों बातें मुश्किल हैं, इस लिये बहुत से प्रयत्न करते हैं, किन्तु थोड़े ही सफलता पाते हैं, तो भी कौन नहीं प्रयत्न करता ? अगर इसके लिये परिश्रम कर प्राप्त की हुई वस्तु को स्थायी रखनी हो, चाहे थोड़ा ही मिला हो, किन्तु उसको चिर स्थायी बनाना हो, उस में से आनन्द प्राप्त करना हो, दूसरे को आनन्द प्राप्त कराना हो, तो थोड़ा-सा दुःख सहन करके भी सत्य का आदर करो, जिससे प्राप्त हुई कीर्ति-ऋद्धि स्थायी रहेगी, जो २ प्राप्त होगा, उससे तनिक भी कमती न होगा, जब कमती होने का ही नहीं, तो फिर वह ऋद्धि-सिद्धि की कौन सी टोच पर जाकर अटक जायगा, इसका ख्याल

कौन कर सकता है ? कोई भी नहीं, इस लिये अनन्त ऋद्धि-सिद्धि के प्राप्त करने के लिये सत्य का सेवन करना और उस प्रयोग का उपयोग करना।

पुरुषार्थ

सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक चरित्र यह तीनों मोक्ष के साधन हैं और मोक्ष ही परमोत्कृष्ट पुरुषार्थ है, मन वचन और काया से अपन उस पुरुषार्थ की कैसे साधना कर सकते हैं ? जब कभी मन निश्चित मार्ग से बाहर जाता है, तब उसको ज्ञान और तत्त्व चिन्तन में जोड़ देना, वचन को दर्शन में शुद्ध श्रद्धा पूर्वक मन्त्रोच्चारण के कार्य में जोड़ देना और काया को चरित्र में सदाचार में और सत्कार्य में जोड़ देना।

मंत्र

जैसे कोई भी आदमी का ध्यान करते २

शनैः २ उस पुरुष के गुण याद आते हैं। फिर कार्य याद आता है किन्तु उत्कृष्टता से जिसने अपना जीवन व्यतीत किया है, उसका पुरुषार्थ मूर्तिमन्त होकर शीघ्रतया याद आता है, शिवाजी नैपोलियन वगैरह; किन्तु जब उनकी आखिरी स्थिति का चीतार आता है, तब अपने में उदासीनता छा जाती है, जो महान् तीर्थंकर शनैः २ आगे बढ़ते हुए अन्त में सिद्ध पद को प्राप्त हुए हैं, उनका चीतार तो अपने चढ़ते परिणाम ही धारण करते हैं और जिसका परिणाम चढ़ता है वही आगे बढ़ सकता है, पीछे नहीं हटता, आज कल सब कोई ऐसा ही चाहते हैं, इस लिये 'नवकार' मन्त्र पढ़ने की आवश्यकता है।

सत्य

प्रत्येक सैकिंड में आदमी मरता है और प्रत्येक सैकिंड में आदमी का जन्म होता है। ऐसा ही नियम चला आता है किन्तु मृत आदमी पुनः

मनुष्यों का अवतार पायगा या नहीं ? यह सन्देहात्मक है, किन्तु जो सत्यवान हैं वे निःशंक होते हैं।

पुरुषार्थ

तृण के ऊपर जैसे उसके टीपें क्षणवार रहते हैं, उसी तरह से अपने इस शरीर की क्षण भंगुर स्थिति है, इसलिये धर्म के अच्छे २ कार्य करने में जरा सा भी विलम्ब करना नहीं। क्योंकि इस मानव जीवन की जो अमूल्य घड़ी चली जाती है, वह किसी दिन लौटने वाली नहीं है। इस लिये घड़ी में से गिरती हुई रेती की प्रत्येक कणी को मणि रत्न के समान मूल्यवान गिन करके उनका सदुपयोग करना, अक्लमन्द आदमी वही है जो मिली हुई सुन्दर तक को व्यर्थ नहीं जाने देवे किन्तु अच्छे कार्य में उस तक का उपयोग करे।

मंत्र

मंत्र खुद शक्ति है, इस मंत्र को साधन करने

वाले अपनी इच्छानुसार उस शक्ति को उपयोग में ला सकते हैं। जिस दिशा में शक्ति दौड़ाना हो, दौड़ा सकते हैं। यानी अच्छा या बुरा दोनों रास्ते में उपयोग कर सकते हैं। किन्तु 'नवकार' तो उसके साधन करने वाले आदमियों को अच्छे रास्ते पर ले जाता है इतना ही नहीं टुंकी (Short) दृष्टि वाले, नीच स्वार्थ साधन करने वाले एवं नीच वृत्तियों को सन्तोषने वाले आदमियों को उन गतियों से उद्धार कर सद्गति को पहुंचाता है। जिससे दुनियाँ में इस महान्-मंत्र की साधना करने वालों को उच्च मनोवांछित सिद्धि होती है, और उनका जय २ कार होता है।

वांछित पूरे विविध परे, श्री जिन शासन सार।
निश्चै श्री 'नवकार' नित्य, जपता जय जय कार ॥

सत्य

जैसा हो वैसा कहने वाले, वैसा कहने की हिम्मत करने वाले, एवं चाहे जैसे संकट के समय

भी सत्य का पालन करने वाले ही सच्चे मनुष्य हैं, वे ही सरदार बन सकते हैं, और समाज को सत्पथ की ओर ले जा कर संकट से बचाते हैं। धन्य है ऐसे सत्यवान् पुरुषों को।

पुरुषार्थ

करना है, सो करना, करना यह फर्ज है। कर्तव्य यह धर्म है। जो कर्तव्य नहीं करता है, उससे पीछा हटता है, वह पुरुषार्थ से पीछा हटता है इसलिये पुरुषावतार को लजाता है।

मन्त्र

इस महामन्त्र के आराधक ही भूमण्डल पर जैन धर्म के उन्नत एवं परम शान्तिदायक झंडे को फहरायेंगे। जैनधर्म का झण्डा अर्थात् परम अहिंसा का झण्डा, परम अहिंसा का झण्डा अर्थात् विश्वव्यापी प्रेम, सहकार सफलता, एवं अभय दान आदि की अपूर्व लहर। यदि आप संसार को प्रेममय बनाना चाहते हो, यदि आप चाहते

हो कि प्रत्येक जीव दूसरे जीव को विचार मात्र से भी न दुःखा कर हर समय एक दूसरे की सहायता करते रहें, यदि आप चाहते हो कि सभी जीव पारस्परिक अविरल सहयोग के कारण सदैव सफलीभूत बनें और यदि आप चाहते हो कि इस संसार में सबल और निर्बल धनिक और निर्धन, शिक्षित और अशिक्षित, राजा से रंक तक, बच्चे से बुड्ढे तक यावन्मात्र जीव एक दूसरे से किसी भी प्रकार भयभीत न हो कर परम शान्ति और स्वच्छंदता से सर्वत्र विचरण कर सकें, तो इन सब को सम्पन्न करने के लिये केवल एक अमोघ उपाय है। वह है 'नवकार मंत्र और उसकी व्यापकता। आप इस महा-मन्त्र की रटन लगाओ और अन्य जीवों को इसकी शान्तिदायिनी रटन करने दो। 'नवकार' मन्त्र के प्रभाव से जगत अपने सच्चे स्वरूप को जानेगा। फलतः सर्वत्र अहिंसा का प्रचार होगा और यह संसार जो दुःख रूप दिखाई देता है। वही सुख और परम विश्राम का आगार बन जायगा।

सत्य

जो परम सत्य है वही मेरा आश्रय है। जो भूमि सत्य है वही मेरी जन्म-भूमि है। असत्य बोलना न तो मेरा स्वरूप ही है और न मेरा कर्तव्य ही ही है। असत्य बोलना मानो आत्मा के सच्चे स्वरूप को ढंकना है, उसका अपमान करना है। जीवन को तुच्छ और भार भूत बनाना है और आस पास के वातावरण को विकृत एवं अशान्ति मय बनाना है। असत्य बोलना मानो परम अभिराम शुद्ध वस्तु स्थिति को मलीन बनाना है। आह, तो क्या असत्य बोल कर इस मनुष्य जन्म को बरबाद करना नहीं है? पवित्र मानव कर्तव्य की क्या अवहेलना नहीं है? कहां तो पवित्र आत्मा और कहां असत्य व्यवहार निंद्य कर्म? असत्य से आत्मा अपनी सच्ची उन्नति नहीं कर सकता ऐसा समझ कर यदि तुम्हें आगे बढ़ना हो, सफलता

प्राप्त करनी हो और जीवन सफल करना हो तो असत्य से बचो।

पुरुषार्थ

हम पुरुषार्थी हैं, हम दुनियां को शिक्षा देते हैं परन्तु वह हमारी शिक्षा को ग्रहण नहीं करती, वह उसको नहीं मानती। यह कृतघ्न है, चाहे तुम कुछ भी क्यों न मानो, तुम्हारा अनुभव कितना भी अधिक वृद्धिगत क्यों न हो, परन्तु जो कोई भी पुरुषार्थी दुनियां पर अपनी छाप बैठाने में अयोग्य सिद्ध होता है, तो समझना चाहिये कि उस पुरुषार्थी में ही कुछ कमी रह गई है। उस कमी का इलाज होते ही सच्चे पुरुषार्थी दुनियां में अपनी छाप बैठाये बिना नहीं मानते। पुरुषार्थ अन्तरात्मा का एक प्रकार का अव्याबाध प्रकाश है जो कैसे भी अन्धकार में, संसार की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी किसी भी अवस्था में महान् दुस्तर आपत्ति में दुःख, शोक और अन्य किसी भी

प्रकार की जटिल से जटिल विघ्न बाधाओं में अपने आन्तरिक दिव्य आभा को छिटकाये बिना नहीं रहता। सत्पुरुषार्थ करो—तुम्हारे सभी गुण उसकी दिव्य ज्योति में स्वयं प्रकाशित होने लगेंगे।

मंत्र

जैन जाति सब से ऊपर अपना आधिपत्य जमाने वाली कौम है। आधिपत्य वही व्यक्ति जमा सकता है कि जो अपनी छत्र-छाया में रहने वाले यावज्जीवों पर निष्पक्षरीत्या शासन करता है। अर्थात् जो न्याय के आगे अपने खास भाई-बन्धु, चाचा, मामा आदि स्व-कुटुम्बी-जनों को एवं अन्य साधारण प्रजा को समान समझ सकता है। तो क्या वस्तुतः जैन-समाज आज आधिपत्य भोग रही है? यदि हम आधिपत्य नहीं भोग रहे हैं तो निःसन्देह हमारे जैन पने में कोई न कोई त्रुटि है और उस त्रुटि के कारण ही हम इस अधिकार के

लिये अयोग्य हो गये हैं ? फिर इस त्रुटि को दूर करने का सरलतम उपाय क्या है ?

सच्चा जैन बनने के लिये प्रथम 'नवकार' मन्त्र का आधार लो। 'नवकार' के प्रभाव से आत्मा शुद्ध होगी और अन्धकार में पड़े हुये गुण इसकी निर्मल आभा में देदीप्यमान हो उठेंगे।

दुर्गुणों को दूर करने और उनके स्थान में गुणों को स्थापित करने के लिये 'नवकार' अमोघ उपाय है अतः इसका ध्यान कर आत्मिक गुणों को विकसित करो—तुम स्वयं सुखी होओ और जगत् का कल्याण करो।

सत्य

गुजराती लोगों के मन में अनेक कारणों से यह धारणा घर कर बैठी है कि काठियावाड़ अर्थात् झूठ का घर और लुच्चाई का भंडार। यह किंवदन्ति सत्य हो अथवा असत्य; तो भी ऐसे देश में प्रभु-परायण मनुष्य होते हैं और अपनी

जीवनी को आदर्श बना कर दूसरों को भी सुधारने के लिये शिक्षा देते हैं।

काठियावाड़ के एक बड़े शहर में एक गरीब कंसारे की दूकान पर कुछ सौदा-सपाटा करने के लिये मैं गई। एक-दो चीजों के भाव पूछे। कंसारे ने उनके भाव बतलाये और कहा कि हे बहिन! अमुक मनुष्य से तो इस वस्तु का मैंने यह भाव लिया है परन्तु तुम से मैं दो आना कम ले लूंगा। मैंने कहा—खैर; यह तो ठीक है परन्तु तुम क्या घर २ के लिये भिन्न २ भाव रखते हो? कंसारा यह बात सुन कर चित्त में कुछ लज्जित सा तो हुआ परन्तु अपनी लज्जा को छिपाने के लिये उस बर्तन को पुनः तोल कर कहा—कि नहीं; वह बर्तन इसकी अपेक्षा कुछ भारी था। कुछ देर पीछे मैंने इष्ट वस्तुयें खरीदी और उससे उन सब की इकट्ठी कीमत पूछी। यह सुन कर तो वह कुछ सकपका सा गया और बोला कि हे बहिन! तूने आज मुझे

जो हथोड़ा मारा है उसकी मेरे हृदय पर गहरी चोट पड़ी है और उसका दर्द मुझ से सहा नहीं जाता। मैं सेवा-समाज का एक सभ्य हूँ और मैं अपने सभी लड़कों की शपथ से कहता हूँ कि आज से जितनी पेढ़ी तक यह दूकान चलेगी तब तक मेरी दूकान पर केवल एक दाम रहेगा; किसी के लिये एक से दूसरा दाम नहीं होगा। हे बहिन! तूने आज मुझे जो शिक्षा-प्रद पाठ सिखाया है उसको मैं आजन्म नहीं भूलूंगा। जिस समय गद्गद् होकर वह ऐसे उद्गार कह रहा था उसका चहरा किसी अपूर्व तेज से दैदीप्यमान हो रहा था। आंखों में एक अनोखी चमक थी। ये सभी बातें उस दृश्य को और भी अनोखा बना रही थी। मुझे भी ध्यान आया कि अहा! ऐसे ही स्थल में ईश्वर वास करता है और उसका साक्षात्कार भी ऐसे ही दृश्यों से हो सकता है। यह मनुष्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ झुक कर मुझे नमस्कार करने लगा परन्तु मैंने उसे रोक कर कहा

कि हे बन्धु! मुझे नमस्कार न कर; तूने आज मुझे सच्चा बोध दिया है और परमात्मा का साक्षात भान कराया है। आज ही मैं समझ सकी हूँ कि छोटा सा छोटा मनुष्य भी ऐसी क्रियाओं द्वारा दिव्य उपदेश दे सकता है। बाह्य व्यवहार में ऐसे असंख्य दृश्य होते रहते हैं परन्तु यदि उनमें से २-४ की भी शिक्षायें आत्मा में उतर जायें तो निश्चय से अपना जीवन धन्य हो जाये। (शारदा)

पुरुषार्थ

इस छोटे से मानव-जीवन में जिसे कुछ भी महत्कार्य सम्पन्न करना हो उसे वह कार्य कम से कम इतने परिश्रम एवं एकाग्रता पूर्वक करना चाहिये कि उसको देख कर मौज, शौखों एवं विषय की दल २ में फंसे हुए अन्य मनुष्य उसे पागल सा समझें। श्रम, एकाग्रता एवं आत्म-भोग ये तीनों बातें किसी भी कार्य में उच्चतम सफलता पाने की अव्यर्थ चाबियें हैं। जहां श्रम होता है-वहां

इष्ट कार्य की निर्विघ्न समाप्ति में; जहाँ एकाग्रता होती है-वहां पर कोई कैसी भी अनीति न होने में कदापि सन्देह नहीं रहता है। इस लिये जहां पर इन तीन गुणों का समुदाय रहता है वहाँ पर संसिद्धि, संतोष और सफलतायें स्वयं विराजमान रहती है।

सत्पुरुषार्थ में उक्त तीनों बातों का ही समावेश होना है।

मंत्र

जल में सूर्य प्रकाश पड़ने से जैसे उसका प्रतिबिम्ब अन्यत्र कहीं न कहीं पड़ता ही है ठीक इसी तरह से आत्मा-रूपी स्वच्छ निर्मल-जल में 'नवकार' का तेजोमय प्रकाश पड़ने से एक विचित्र स्वात्म-भूति अथवा आत्मिक-आनन्द का प्रतिबिम्ब पड़ता है। इस प्रतिबिम्ब और आत्मा के बीच में शुद्ध आनन्द की प्रकाशमान स्फूर्तियें निकलती रहती हैं जो आत्मा को कर्म-रूपी कालिमा-किट्टिमा से दूर कर शुद्ध बनाती है और

आत्मा अपनी शुद्ध अवस्था को प्राप्त करने के मार्ग पर आ जाता है। अहा! वह आत्मा की कैसी अभिराम अवस्था है, क्या ही अलौकिक सुख है। उस परमानन्द को अनुभव करने को क्या कभी तुम्हारा अन्तरात्मा आतुर नहीं होता है? यदि होता है तो उसकी प्राप्ति का मार्ग सहज है। सर्व-प्रथम उसकी प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा पैदा करो, पीछे प्रयास करो—देखो कैसी जल्दी पूर्ण होती है। आनन्द पाना; यह तो प्रत्येक आत्मा का स्वभाव सिद्ध महान् अधिकार है। इस अपने अधिकार की अवहेलना कर देना कोई कदापि नहीं सह सकता। इस लिये इसको सिद्ध करने के लिये महा-मन्त्र 'नवकार' की शीघ्र और योग पूर्वक आराधना करो।

सत्य

सत्य को ग्रहण करने से क्या फायदा? सत्य को ग्रहण कर वर्तमान समय प्रगति में दूसरों

द्वारा क्यों अपमानित हों ? दूसरों से बे फायदे क्यों विरोध बढ़ावें ? संसार में रह कर सत्य का आधार लेने से कैसे गुजर हो ? ठीक है; जिस मनुष्य से दुःख भागता हो, अथवा जो इस संसार में दुःख भोगने के लिये ही अवतीर्ण हुआ हो ऐसा मनुष्य भले ही अपने व्यवहार को असत्यमय बनाये रक्खे परंतु जो व्यक्ति दुःख से डरता है, असफलताओं से घबड़ाता है; समान व्यवसायियों में सफलता चाहता है, ऐसे व्यक्ति को तो सब छोड़ कर केवल एक सत्य का ही आश्रय लेना चाहिये।

पुरुषार्थ

अपने देश के गत वैभव को पुनः प्राप्त करने के लिये और संसार की उन्नतिशील प्रजाओं की अपेक्षा पश्चात्पद अपनी प्रजा को उनकी समान श्रेणी में रखने के लिये सतत प्रयास करने वाले सीनोर मुसोलिनी की तरफ देखो !

इस नर पुंगव की जान लेने के लिए न मालूम कितनी व्यक्तियाँ लुके छिपे इसका पीछा किया करती हैं। तो भी यह अटल पुरुषार्थी डंके की चोट घोषणा करता है कि मेरे उद्देश्य को कोई कदापि नहीं तोड़ सकता। अपने विरोधी देशों को जिस किसी तरह दबाना और उन पर इटली की छाप बैठाना यही उसकी नीति है। नियम एवं कानून घड़ने में तो वह अपना सानी नहीं रखता। अपने देश के लिए उसने अपने जीवन को सहर्ष अर्पण कर रक्खा है। यह पुरुषार्थ विकृत है इसमें प्रेम-भावना का नाम कहां है? इसमे तो शान्ति के बदले अशान्ति का बीजवपन होता है। अपने कट्टर दुश्मनों को प्रेम से शान्त कर देना—यही तो सच्चे पुरुषार्थ की कसौटी है। सच्चे प्रेम के ऊपर उठाई हुई मित्रता या प्रभुता ही निश्चल रह सकती है। इसलिए प्रेम-पाठ सीखना—उसको दिगन्त व्यापी बनाना यही तो सच्चा पुरुषार्थ है।

मन्त्र

इस संसार में केवल 'नवकार' मंत्र ही एक ऐसा मंत्र है कि जिसके शब्दों में कोई कैसा भी दोष नहीं निकल सकता है। इस सर्वथा निर्दोष मन्त्र को आराधन करने वाला सर्व दोषों से विमुक्त होकर परम शुद्ध अवस्था को प्राप्त हो जाता है। ऐसी निर्दोष अवस्था प्राप्ति के लिए कौनसा जीव लालायित न होगा ? क्योंकि यह निश्चित बात है कि निर्दोष व्यक्ति ही शुद्ध आनन्द, शुद्ध वैभव एवं शुद्ध ऋद्धि को भोग सकता है। ऐसे विशिष्ट आनन्द आदि को भोगने के इच्छुक जीव को इस "नवकार" मंत्र मय ही बन जाना चाहिये।

वैखरी वाणी (बाह्य में स्फुट या उच्च स्वर में बोलने) से मंत्र सिद्धि नहीं होती है यह बात सत्य नहीं है। इतना होने पर भी कुछ लोग ऐसा न करने वालों की हँसी उड़ाते हैं और उन्हें अनभिज्ञ बतलाते हैं। परन्तु वस्तुतः उनकी यह कृति भ्रम-

पूर्ण है। कैसे भी भयंकर वन में रास्ता निकालने के लिये बड़ी नाप-तोल या ज्योमिति के सिद्धान्तों के पालन की आवश्यकता नहीं है और न यही आवश्यक है कि उस मार्ग को निकालने के लिये एक ज्योमितिकार प्रसस्त विद्वान ही हो—अन्य नहीं; प्रत्युत: असली बात तो यह है कि मूर्ख से मूर्ख अथवा कैसा भी उजड्ड ना-समझ मनुष्य के चलने से एक पगडंडी (रास्ता) बन जाती है और फिर उस पार से सैंकड़ों हजारों बुद्धिमान मनुष्य चले जाते हैं। उसी तरह मुंह से 'नवकार' मन्त्र का उच्चारण करने से दूसरों के हृदय-ज्ञान-चक्षु खुलते हैं और उन्हें स्वतन्त्र का बोध होता है और साथ ही साथ उच्चारण करने वाले का 'नवकार' मय चतुर्दिक वातावरण श्वासो-श्वास द्वारा उसके अन्दर समाविष्ट होता है। पीछे से क्या २ परिणाम आता है यह तो सर्व विदित ही है अर्थात् सुख एवं आनन्द उसको वरण करते हैं।

सत्य

इस सत्य पदार्थ का लाभ करना कठिन काम नहीं है। यह पदार्थ भली-भाँति प्रकट है, सुस्पष्ट है और बाहर तथा भीतर सर्वत्र विराजमान है। सांसारिक द्रव्य के उपार्जन के निमित्त जितनी चेष्टा तथा दृढ़ता का प्रयोजन है, सत्य वस्तु के पाने के लिये उतनी का भी प्रयोजन नहीं होता। जो लोग उसको बहुत दुर्लभ मानते हैं और यह समझते हैं कि यह कठोर तपस्या के द्वारा पाया जाता है वे भी सत्य से बहुत दूर हैं। जब प्रत्येक वस्तु अपने सत्य स्वरूप में है और जो कुछ होता है वह भी सत्य ही होता है—तदुपरान्त अपनी आत्मा का स्वभाव भी सत्यमय है तो फिर इस सत्य गुण का विकाश तपस्या जनित अथच कष्ट साध्य कैसे कहा जा सकता है?

पुरुषार्थ

अपनी आत्मा के स्वाभाविक अनन्त पुरु-

पार्थ ! अज्ञ मनुष्य सांसारिक बाह्य परिस्थितियों के प्रतिकूल वायु की थपेड़ों में कभी रोते हैं, कभी दिखावटी हँसी हँसते हैं; कभी दुःख मान कर मुंह बनाते हैं और कभी आत्म-विस्मृत हो जाते हैं। अपनी इस अज्ञ दशा में वे नाना तरह की प्रवृत्तियाँ करते हैं और उनके परिणामों से दुःख एवं शोक मनाते हैं, परन्तु पुरुषार्थी मनुष्य ऐसे समयों में भी अपनी स्वाभाविक गम्भीरता को नहीं छोड़ता। जो अवसर एवं परिस्थितियाँ अज्ञ पुरुषों को रुलाती हैं वे ही पुरुषार्थी को नया बल देती हैं; सो क्यों ?

इसका कारण स्पष्ट यह है कि अज्ञ पुरुष प्रथम तो आत्मा की शक्ति को ही नहीं पहिचानता और यदि जानता भी है तो दुःखों एवं क्लेशों से इस आत्मिक-शक्ति के विकास का कितना गहरा सम्बन्ध है—वह यह तो अवश्य ही नहीं जानता है। प्रत्युतः पुरुषार्थी ऐसे दुःखों एवं क्लेशों से

जरा भी नहीं घबराता—वह तो उन्हें सदैव आह्वान करने के लिये तत्पर रहता है क्योंकि वह अच्छी तरह से समझता है कि :— The path of Sorrow and that path alone, Leads to the land where sorrow is unknown. दुःखों एवं क्लेशों का ही मार्ग एक ऐसा मार्ग है जो समस्त बाह्य क्लेशों से उबार कर सातिशय परमानन्द धाम को पहुंचा देता है। आपत्तियों, क्लेशों और दुःखों से परमानन्द अवस्था का यह तारतम्य सम्बन्ध है और सुज्ञ पुरुषार्थी उन्हें भली प्रकार समझता है। अज्ञ जीव इस रहस्य को न जान कर जब मलिन मुख दिखाई देता है तब पुरुषार्थी प्रसन्न और तत्पर दिखाई देता है। यह रहस्य ही पुरुषार्थ का जन्मस्थान है।

'नवकार'

जिन जहाजों में दिशा-सूचक यंत्र (mari-

ner's Compass) लगा होता है वे अनन्त गंभीर एवं महा विस्तीर्ण महासागरों की ऊंची-नीची तथा सम-विषम सभी प्रकार की परिस्थितियों को निर्भयता पूर्वक पार करके अपने यथेष्ट स्थानों पर पहुँच जाते हैं। भले ही तूफान की भयंकरता से अपने निश्चित मार्ग से थोड़े बहुत दूर हो जायें—तो भी उनकी सलामती में कोई अन्तर नहीं पड़ता—वे अपने निश्चित स्थान पर आ ही पहुँचते हैं। ठीक इसी तरह इस संसार रूपी महासागर में आत्मा रूपी एक छोटा सा जहाज है। यह जहाज इस महासागर की कैसी भी अनुकूल प्रतिकूल परिस्थिति में मार्ग-च्युत न हो जाय—इसके लिये तुम इस जहाज में 'नवकार मंत्र' का दिशा-सूचक यंत्र जरूर लगाओ। सामान्य दिशा-सूचक यंत्र फैल भी हो जाते हैं परन्तु यह यन्त्र तो अमोघ है, अव्यर्थ है; और फैल होना तो यह जानता ही नहीं है।

सत्य

वैदिक-शास्त्रों में एक युग का नाम कलियुग है। इसका यह नाम क्यों पड़ा? जब जन समुदाय प्रायशः इस नित्य, सिद्ध, सहज सत्य वस्तु को बहुत दूर रख देते हैं तभी कलियुग का प्रभाव फैलता है परन्तु सतयुग में ऐसा नहीं था। उस युग में अधिकांश मनुष्य बहुत सत्य-दर्शी थे, सत्य को ढूंढते थे तथा सत्य प्राप्ति के लिये सदैव तत्पर रहते थे। सत्य एक प्रकार का आत्मिक अमृत है और उससे वञ्चित रहने से ही बार-बार जन्म-मृत्यु के चक्र में पिलना पड़ता है। मृत्यु ही कलन या कलि है और जिस युग के मनुष्य इस कलन या मृत्यु की ओर वेग से बढ़ते हैं उसी युग का नाम है-कलियुग। जब युगों का निर्माण सत्य एवं असत्य से होता है तो क्यों न सत्य को ग्रहण कर इस कलि-युग को सत्य युग में परिणत कर दें? जिससे वर्तमान दुःखों से निकल कर सुख-शांति पा सकें।

निश्चय रक्खो कि अनन्त शक्तिधारी यह आत्मा निर्जीव काल को अपनी इच्छानुसार परिवर्तित कर सकती है। केवल अपनी इस सत्य निधि को सम्भाले रक्खो; यह तुम्हारा अजेय कवच है; इस कवच पर काल सदृश नगण्य कारण कुछ भी प्रभाव नहीं डाल सकते।

पुरुषार्थ

हे मित्र! तुम इन दुःखों, क्लेशों और आपत्तियों से मत डरो। ये वस्तुयें वस्तुतः डरने की नहीं हैं। जिस आनन्द एवं सुख के तुम प्यासे हो, जिनकी प्राप्ति के लिये तुम व्यग्र हो, जिनका दर्शन-मात्र तुम्हें उसकी प्राप्ति के लिए चंचल एवं उत्कण्ठित बना डालता है; उन्हीं आनन्दों का सच्चा जन्म-स्थान तुम्हें मालूम है—क्या है? यह बात तो सर्व विदित ही है कि कीचड़ से ही पुष्प-राज कमल की उत्पत्ति होती है; पत्थर और कोयले की गहन अन्धकारमय खानों से ही

अमूल्य रत्न पैदा होते हैं; गुलाब के फूल काँटों वाले पौदे में ही पैदा होते हैं—इसी तरह से सुख एवं आनन्द उन वस्तुओं एवं विचारों से उत्पन्न होते हैं जिनको हम दुःख और क्लेशों के नाम से पुकारते हैं। यदि इस संसार में इन दुःखों एवं क्लेशों को सत्ता न होती तो तुम्हीं कहो—इन सुखों, आनन्दों की क्या कीमत होती ? मैं समझता हूँ कि ऐसे कोरे सुख को कोई मुफ्त भी लेना न चाहेगा। शक्कर का मिठास कब पूर्णतया ज्ञात होता है ? जब कि उसके खाने के पहिले कोई कड़वी, तीखी या नीरस वस्तु खाई हो। मिठाई के ऊपर मिठाई खाने से मिठाई का मीठापन निकल जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मिठाई के मीठेपन की महत्ता एवं स्वादिष्टता कडुएपन के कारण से है न कि मिठाई से, इसी तरह इन सुखों एवं आनन्दों की सत्ता महत्ता इन दुःखों एवं क्लेशों से है जिनसे तुम घबड़ाते और डरते हो। ऐसी दशा में तुम्हें सच्चा सुख मिले भी

कैसे ? यदि तुम सच्चा सुख अनुभव करना चाहते हो तो इन दुःखों को तुम सहर्ष आलिंगन करो; आने वाले दुःखों को सहर्ष सहन करने के लिये अभी से आह्वान न करो। सच्चे सुख पाने की असली कसौटी शान्ति-पूर्वक दुःख सहन करना है; यदि सुख ध्येय है तो दुःख उसकी प्राप्ति का एकतम मार्ग है; यदि सुख कमल है तो दुःख उसका जन्म-स्थान कीचड़ का दल-दल है और यदि सुख रत्न है तो दुःख उसके निकलने की अन्धेरी काल कोठरी है। मत भूलो इस रहस्य को। यह वह रहस्य है जिससे मनुष्य सदा सब कालों में परम सुख का अनुभव कर सकता है; यह वह रहस्य है जो आपत्तिकाल की गहरी घन-घटाओं में सुख के बालसूर्य के तेजोमय प्रभात का अनुभव कराता है और पूर्ण स्मृद्धि के आनन्द-महासागर की गगनचुम्बी उत्ताल तरंगों में भी आत्मा को गह्वर अन्तस्तल के समान गम्भीर-शाँत रखता है। वह यह है जो पार्थिव संसार से तेजोमय आत्मा को

संलग्न करता है; यह उसे कहीं बांधता है, कहीं छुटाता है और पूर्ण स्वतन्त्र बनाता है। उसी का दूसरा नाम आचार्यों ने पुरुषार्थ रक्खा है।

मन्त्र

समस्त विश्व में जो २ कार्य होते हैं—उनके मूल कारणों पर पहिले विचार किया जाता है। खाते क्यों हैं? भूख लगती है इस लिये। पीते क्यों हैं? प्यास लगती है इस लिये। इसी तरह से संसार के अनादि अनन्त कालीन चक्र में पिसते २ जीवात्मा निराश हो जाता है और पीछे विचार करता है कि किस तरह से इस चक्र से मुक्त होऊं। संसार भीत एवं मोक्ष प्राप्ति के आराधक जीवों के लिये 'नवकार' एक प्रकार का अवलम्बन है—इससे वे अपना अभीष्ट सिद्ध कर सकते हैं और व्यावहारिक समस्त प्रकार की उन्नतियाँ सरलता से कर सकते हैं और अन्त में संसार क्रम को सदैव के लिये नष्ट करके

स्वाभाविक अनन्त शान्ति, अनन्त सुख एवं बल को प्राप्त होते हैं। यह 'नवकार' मन्त्र उक्त इष्ट-सिद्धि का बीज है। उसके ऊपर ध्यान रूपी वर्षा-जल ज्यों २ पड़ता जायगा त्यों २ यह एक वृक्ष रूप में अंकुरित होगा और कालान्तर में इसमें उक्त महान् फलों की उत्पत्ति होगी।

सत्य

यह संसार के किसी अप्रसिद्ध स्थान में अदृश्य पड़ा हो; अथवा हिमालय की किसी गहरी अंधेरी गुफा में गुप्त पड़ा हो; अथवा पृथ्वी के किसी अछेद्य अन्तस्तल में बन्द पड़ा हो— ऐसी मान्यतायें अशुद्ध एवं निर्बल हृदय की मात्र कल्पनायें हैं। यह तो कभी भी छिपा रह ही नहीं सकता है। थोड़ी देर के लिए भले ही इसके ऊपर आवरण आ जावे परन्तु जैसे तेल बिन्दु भले ही वह गहरे समुद्र में क्यों न छोड़ दिया गया हो, तो भी वह पानी की सतह पर आये

बिना नहीं रहता—ठीक वैसे ही यह भी प्रकट हुये बिना नहीं रहता। असत्य एक ऐसा भीषण दोष है जिसकी पुष्टि के लिए हजारों असत्यों की सृष्टि करनी पड़ती है तो भी अन्त में सत्य छिपा नहीं रहता है इस लिये उन सब पापों से बच कर केवल एक सत्य का आश्रय लो। विघ्न-बाधाओं के दूर हो जाने से बहुत शीघ्र ही तुम्हारी उन्नति होगी।

मंत्र

संसार की अनेक घटनाओं में से गुजरते हुये मनुष्यों को "शान्ति" की अत्यन्त जरूरत है। जिस तरह तमाम दिन कठिन काम करने के बाद हमें विश्रान्ति लेने की जरूरत पड़ती है उसी तरह संसार की ८४ लक्ष योनियों में कटते-पिटते, मारते मरते और तरह २ की क्रियायें करते हुये भव्यात्मा थक जाता है तब उसे विश्रान्ति की जरूरत पड़ती है। इस विश्रान्ति की प्राप्ति का सरल और सच्चा

मार्ग एक ही है और वह है 'नवकार'। यह मन्त्र ऐसा विजयी है कि इसके बार २ आराधन से जीवात्मा की वह थकावट चिरन्तन शान्ति में परिणत हो जाती है; कर्मों के जकड़े हुये बन्धन ढीले पड़ जाते हैं। अशुभ कर्मों की तीव्रता कम पड़ती जाती है और शुभ कर्मों का उदय होता है। सुख प्राप्ति होना शुभ कर्मों का फल है और उस सुख को चाहने वाले के लिये यह महा-मंत्र अमोघ है।

सत्य

यह धर्म का प्रधान अंग है। जहां सत्यता नहीं—वहां धर्म नहीं रह सकता। सत्य त्रिकालाबाधित एवं अप्रतिहत है; अमूल्य हीरा है। जैसे हीरा चाहे जैसे स्थान में भी प्रकाशित रहता है उसी प्रकार सत्यवान पुरुष सब दशाओं में, सब देशों में, सब कालों में प्रकाशमान (विजयी) रहते हैं। सत्य एक अजेय कवच है। जिस पर

बाह्य कैसी भी परिस्थितियाँ अपना आवरण नहीं ला सकती। क्यों नहीं इस कवच को पहिन कर निर्द्वन्द्व निर्भय घूमते ?

पुरुषार्थ

संसार के किसी भी कार्य की सिद्धि में इस मित्र की सब से प्रथम आवश्यकता होती है। इस गुण को जिसने अपना मित्र नहीं बनाया—उसे दुनिया में रहने का स्वत्व नहीं है और वह जीता भी नहीं है। तुम जीवन की कैसी भी निराशामय घोर अन्धकार पूर्ण अवस्था में क्यों न आ पड़ो। यदि तुम में उक्त गुण होगा तो तुम्हें सफलता और यश मिलेगा। यह तुम्हारी उन्नति करेगा, तुम्हें महान बनायेगा और इस पृथ्वी-तल पर तुम्हारे जीवन को सार्थक एवं आदर्श बनावेगा।

मन्त्र

जगत् के आबाल वृद्ध समस्त जीव सुख

चाहते हैं और दुःख से घबड़ाते हैं। परन्तु बम्बूल का बीज बो कर जैसे आम का फल नहीं मिल सकता उसी तरह ये सुख के इच्छुक जीव मार्ग न जानने से दुःख देने के कारणों को कर डालते हैं। उस सुख की तलाश में वे नाना प्रकार के कष्ट सहते हैं, महासागर की मुसाफिरी करते हैं; महान् गहन बनों की धूल छानते फिरते हैं; दुर्गम्य पहाड़ों, गुफाओं को पार करते हैं; सारांश यह है कि इस सुख की प्राप्ति के लिये वे जल में, थल में, मस्त हुये फिरते रहते हैं। जैसे कस्तूरी वाला मृग अपनी नाभि में रक्खी हुई कस्तूरी को न जान कर उसकी प्राप्ति के लिए मस्त होकर दौड़ता फिरता है। परन्तु अन्त तक उसे कस्तूरी की प्राप्ति नहीं होती। यदि वह एक क्षण के लिए निश्चित होकर भी अपने गुणों का विचार करे तो कभी भी उसे इतना दौड़ना न पड़े उसी तरह सुख के इच्छुक यदि अपने आन्तरिक गुणों की तरफ दृष्टि डालें तो उन्हें बाहर घूमने की जरूरत ही न रहे। 'नवकार'

मन्त्र उन्हीं आत्मिक गुणों को स्मरण दिलाने वाला सब से उत्तम कारण है। 'नवकार' की आराधना आत्मिक गुणों का स्मरण है। प्रतिदिन का यह स्मरण अभ्यस्त दशा में संस्कार हो जाता है और यह संस्कार ही यहां समस्त ऋद्धि को देकर अन्त में मोक्ष-सिद्धि कराता है।

सत्य

प्रत्येक मनुष्य अपना प्रभाव जमाने के लिए अनेक प्रकार के उपाय करते हैं; उसकी सिद्धि के धन, शक्ति जान-पहिचान और तो क्या बल और छल फरेब से भी काम लेने में नहीं चूकते। परन्तु फिर भी स्थाई प्रभाव जमता नहीं। क्यों? प्रभाव जमने का वास्तविक कारण लक्ष्मी, धन, सत्ता आदि कुछ भी नहीं है; क्योंकि जब ये स्वयं ही चंचल हैं तो उनका परिणाम निश्चल कैसे हो सकता है? पलभर में लक्ष्मी और सत्ता ज्यों ही नष्ट हुई त्यों ही बड़े से बड़ा प्रभाव गिर कर

बिखर जाता है। सच्चा एवं स्थाई प्रभाव डालने का एकतम साधन सत्य है।

पुरुषार्थ

उद्यम बिना तो पशु भी नहीं रह सकते—फिर मनुष्य कैसे रह सकते हैं। जो पुरुष पुरुषार्थ-हीन हो—वह तो पशु से भी तुच्छ प्राणी है। पुरुषार्थ ही मनुष्यत्व है और जिस मनुष्य में मनुष्यता ही न हो–उसे मनुष्य कैसे कहा जाय ?

मंत्र

संसार का कोई भी कार्य छोटा हो या बड़ा; बिना मन्त्र के नहीं हो सकता। मन्त्र अर्थात् विचार। बिना विचार के कोई कार्य कभी नहीं हुआ और हो भी नहीं सकता। ज्यों २ शुद्ध विचारों का सेवन किया जावेगा त्यों २ आत्म-शुद्धि और सफलता मिलेगी। 'नवकार' उत्तम से उत्तम विचार है; इसमें अगाध शक्ति है; इसकी महिमा अपार है।

इसके प्रभाव में क्रूर हिंसकों की हिंसक-वृत्ति तक बदल जाती है। निर्बल भी बलियों को पराजित करते हैं; गरीब, अकिंचन हीन-दीन मनुष्य भी देव-पूज्य बन जाते हैं। ये सब इसकी अनन्त शक्ति और महत्व के द्योतक हैं।

सत्य

महापुरुष कहते आये हैं कि समय एक ऐसी विलक्षण रबड़ है जिसे कितना भी लम्बा तानते जाओ फिर भी वह टूटती नहीं। नासमझ आदमी इसका अर्थ न समझ कर हँस देते हैं परन्तु यह कथन सत्य है और उसके अर्थ में एक विलक्षण तत्त्व छिपा हुआ है। लोग प्रायः अपने जीवन के छोटे होने की सब से अधिक शिकायत किया करते हैं, वे कहते हैं कि इतने थोड़े दिनों में हम क्या २ करें, सब कुछ करने जाते हैं और एक भी पूर्ण नहीं होता। इस कथन में कैसी दयनीय असमर्थता, आत्म अश्रद्धा और अज्ञानता की त्रिपुटी छिपी हुई है।

हम लोग देखते और जानते हैं कि महापुरुषों ने इससे भी छोटे से जीवन में आत्म-प्राप्ति कर ली थी परन्तु फिर भी ना समझ आदमी अपने जीवन के छोटे होने की शिकायत करना नहीं छोड़ते। इसका भी एक कारण है। ऐसे शिकायत करने वाले जीवन एवं समय को बढ़ाने का रहस्य नहीं जानते। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि जीवन (समय) को बढ़ाने का रहस्य सत्य है। असत्य से जो काम १० घन्टे में नहीं होता वह सत्य से एक मिनिट में हो जाता है। अज्ञानी जीव अपने जीवन के अधिकाँश को अपनी असत्य-कृतियों को छिपाने; मिटाने अथवा उसकी वृद्धि परम्परा को रोकने में व्यतीत करते हैं यद्यपि अन्त में उन्हें सत्य की ही शरण लेनी पड़ती है परन्तु इतनी समझ उन्हें बहुत पीछे होती है। महात्मा प्रारम्भ से ही सत्य का आश्रय लेते हैं इसलिए इस छोटे से जीवन में ही अज्ञानी जीव की अपेक्षा

हजारों गुना लाभ उठा लेते हैं। समय एवं जीवन-वृद्धि का सच्चा रहस्य सत्य है।

पुरुषार्थ

मैंने कार्य-क्षेत्र से पीछे हट जाना तो कभी सीखा ही नहीं। बीसियों मनुष्य, पचासों परिस्थितियाँ और सैकड़ों विघ्न-बाधायें मेरे कार्य क्षेत्र में सामने आती रहती परन्तु मैं तो आगे बढ़ता ही जाता हूँ। अपने जीवन-वृत्तान्त को मैं इस एक वाक्य में ही समाप्त किये देता हूं कि बाल्यकाल से लेकर मेरा जीवन आपत्तियों एवं विघ्नों के संघर्षण की युद्ध-भूमि रहा है। परन्तु सतत उद्योग और अनवरत काम में लगे रहने की शक्ति के कारण मैं उन सब से सकुशल पार हो आया हूं। जो मुझे सच्चा लगता है वही मेरा कर्त्तव्य है और उसकी पूर्त्ति के लिये मैं सदैव लड़ता आया हूँ। पुरुषार्थ, महामन्त्र तो मेरे जीवन में ओत-प्रोत हो गया है। इसको मैं जीवन से जुदा नहीं कर सकता।

अपुरुषार्थी जीवन पर मुझे बहुत खेद और पश्चात्ताप होता है। आग के तपाने और हथोड़ों की चोटों से सोने की कीमत बढ़ती है इसी तरह आपत्तियों का आना जीवन की सफलता को और भी पास ला देता है। मैं पुरुषार्थ मन्त्र का आश्रय लेते हुये जगत् की बड़ी से बड़ी आपत्तियों का सहर्ष आह्वान करता हूँ। इन आपत्तियों के पीछे मुझे आत्म-विश्वास एवं विकास की शान्तिदायी झाँखी होती है।

मंत्र

अरिहन्त–सिद्ध–आयरिय–उवज्झाय—साधु इस १५ अक्षर वाली परमेष्ठी के नामों की गुरु-पंचक विद्या का जो पुरुष २०० बार जाप करता है उसे एक उपवास का फल प्राप्त होता है। अरिहन्त–सिद्ध इस ६ अक्षर के अथवा 'अरिहंत'

के चार अक्षर के अथवा केवल (अ-अ-आ-अ-अ* स्वरूपात्मक) पाँच अ वर्णों का जो मनुष्य ३०० बार जाप करता है उसको भोजन करने पर भी एक उपवास का फल मिलता है। श्री हेमचन्द्र सूरि कहते हैं कि इस प्रकार उपवासादिक का जो फल कहा जाता है वह तो सामान्य जनता को इस विषय में प्रवृत्ति करने में प्रोत्साहन देने के लिये है वस्तुतः स्वर्ग एवं मोक्ष-प्राप्ति रूप महान् फल ही इस जाप का मुख्य फल मानना चाहिये।

सत्य

यद्यपि लौकिक एवं पारलौकिक समस्त विषयों में जमीन आसमान का अन्तर है; जो

*अ-अरिहन्त, अ-अशरीर (सिद्ध), आ-आचार्य, अ-अध्यापक, अ-अनगार इन पाँच पदों के प्रथमाक्षर ५ अ होने से अ वर्ण पंच परमेष्ठी मंत्रवाचक मंत्राक्षर हैं।

(जैन साहित्य-संशोधक)

काम लौकिक उन्नति के लिये आवश्यक है वही पारलौकिक उन्नति के लिये विघ्न रूप एवं घातक भी हो सकता है। कहना तो यों चाहिये कि ये दोनों ही विषय एक दूसरे से भिन्न एवं विपरीत हैं फिर भी संसार में केवल सत्य ही एक ऐसा गुण है जो उक्त दोनों विषयों का प्राण है। लौकिक कार्य करते हुये भी केवल सत्य का आश्रय लेने से पारलौकिक अनुपम सुख शान्ति एवं निर्भयता की झांकी होती है। सत्य ही एक ऐसा गुण है जो लौकिक एवं पारलौकिक इन दोनों विषम-विषयों में सौम्य एकता स्थापित करता है। यद्यपि इस संसार में घात-प्रत्याघात का राज्य है; एक जीव दूसरे जीव को नाश कर अपनी स्थिति कायम रखता है इसीलिये संसार में सर्वत्र भय का वास रहता है। परन्तु जब से मैंने सत्य का अजेय कवच पहिना है तब से मैं सर्वत्र निर्भय एवं निर्द्वन्द

विचरता हूं। सत्य ने मुझे निर्भय बनाया है और मैं सच्ची आत्मिक शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ।

(एपी क्यूरस)

पुरुषार्थ

जब आपत्तियों के बादल सिर पर मंडला रहे हों; आस-पास की विकट परिस्थितियों ने जीवन को संकट में डाल दिया हो; जीवन एवं नाश का द्वन्द्व युद्ध हो रहा हो और जीवन का दीपक बुझ रहा हो; भाई एवं उपकारी मित्र भी प्राण लेने की बाजी कर रहे हों और उनका षड्यन्त्र सफल होने की अनी पर हो; आत्मा में निराशा का गहरा अन्धकार छाया हो और दुनिया में कहीं भी आश्रय न मिलने से हृदय अन्तर्ज्वाल से भस्म हो रहा हो; बाह्य परिस्थितियों की भीषणता ने मनुष्य की विद्या, बुद्धि, उत्साह आदि गुणों को दबा दिया हो और चारों तरफ अपने असहायता जन्य घोर अन्धकार हो वहां भी आत्मा

में आशा की एक उजली दिव्य-रेखा दिखाई पड़ती है। वह दिव्य रेखा आत्म श्रद्धान या पुरुषार्थ की है। इसी से सिद्ध होता है कि पुरुषार्थ आत्मा का निजी गुण है।

मन्त्र

जो संसार से पार लगाता है वह मन्त्र है। छोटे २ कुछ अक्षर, छोटा सा उच्चारण (मौन से भी), थोड़े से परिश्रम और अल्प समय में ही कार्य-सिद्धि करता है वही मन्त्र है। ध्येय को सिद्ध करने में जो अति-शीघ्र गति दे सके वही शक्ति-मन्त्र है। आत्मा की विशुद्ध दशा प्राप्ति के लिये जिसने उपाय किये हैं ऐसे गुरु—आचार्य, उपाध्याय एव साधु तथा आत्मा की विशुद्धावस्था को प्राप्त हुये देव—अरिहन्त सिद्ध का अर्थात् पंच परमपदों का नामोच्चार भी सकल सिद्धियों का दातार-मन्त्र है और इसी का नाम ही 'नवकार' महा मन्त्र है।

सत्य

योग शास्त्र फरमाते हैं कि—'सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्' अर्थात् सत्य में स्थित रहने से धर्म-अधर्म रूप क्रियाओं का फल (स्वर्ग नर्क आदि) का आश्रय प्राप्त होता है अर्थात् सत्यवादी को वचन-सिद्धि की लब्धि होती है। सत्यनिष्ठ की वाणी अमोघ (कभी भी व्यर्थ न जाने वाली) हो जाती है। यही कारण था कि सत्य-रक्षा के लिये कालिकाचार्य ने दत्त राजा के क्रोध की भट्टी में अपने आपको सहर्ष झोंक दिया था। राजा हरिश्चन्द्र ने सत्य रक्षा के लिये राज-पाट, धन-दौलत और तो क्या अपनी रानी और पुत्र को भी निछावर कर दिया था। पहिले के योगियों के आशीर्वाद और श्राप क्योंकर सफल हो जाते थे, केवल सत्याश्रयी होने से और सदा ही सत्य बोलने से।

पुरुषार्थ

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

भावार्थ—चलती हुई चींटी सैंकड़ों कोस चली जाती है और बैठा हुआ गरुड़ (यद्यपि उस में हजारों कोस चले जाने की शक्ति है फिर भी) एक इञ्च भी नहीं जाता। नीति का यह सरल और सादा एक श्लोक है। हम में से हजारों ने इसे पढ़ा होगा परन्तु ऐसे कितने हैं कि जिनने इसको कार्य-परिणत किया हो। सैंकड़ों भाई ऐसे हैं जो आज अपनी वर्तमान अवस्था पर दुःखी हैं। यदि उनने प्रारम्भ में निराश न होकर अपना परिश्रम चालू रक्खा होता तो आज निश्चय से दुःख के बदले वे सुख में मग्न होते। आज के दुःख एवं दुर्भाग्य को वे अपने पुराने अनवरत पुरुषार्थ से जरूर २ बदल देते। भारतवर्ष सरीखे बड़े साम्राज्य के पिछले गवर्नर जनरल लार्ड रीडिंग अपने बाल्यकाल की

१६ वीं वर्ष तक जहाज में एक बहुत ही छोटी नौकरी पर काम करते थे। जहाज में खुराक, आटा, चावल, शाक, मुर्गी-अंडा आदि भोजन सामग्रियों की देख-भाल रखने का इनका काम था और महीना पीछे कुल ४०) रु० नौकरी मिलती थी। एक अंग्रेज बच्चा और ४०) रु० महीना की नौकरी और सो भी इतनी हीन। यथेष्ट ज्ञान और उच्च चरित्र संगठन न होने से भूल पर भूल करना इनका स्वभाव हो गया था। एक बार इनकी एक गहरी भूल पर मालिक को बड़ा क्रोध आया और उसने बीसियों गालियां देकर इन्हें नौकरी से अलग कर दिया। कहना और मानना पड़ेगा कि इस अपमान ने ही उनको ऐसा उन्नत आदमी बनाया। जहाज की नौकरी छूटने और मालिक द्वारा किये गये भारी अपमान से इनको भारी चोट पहुँची। अपना दुःखड़ा रोये किससे यही इनको चिन्ता थी। पिता के घर तो जा नहीं सकते थे क्योंकि पिता ने इनको पहिले ही घर से निकाल दिया था।

निराशा और अपमान की भारी ज्वाला में इन्होंने अपने जीवन को या तो उन्नत करने का या नष्ट कर डालने का दृढ़ निश्चय किया। रोते २ ये अपने मामा के पास पहुंचे। बालक को इस तरह रोते देख कर इनके मामा को दया आ गई और उसने इन्हें अपने घर में आश्रय दिया। उस दिन से इन्होंने पढ़ना शुरू किया। पुरुषार्थी युवक एक के पीछे एक परीक्षा पास करता गया और ३५ वर्ष की अवस्था में उसने कानून की सब से ऊँची परीक्षा पास की। बढ़ते २ वे इंगलैण्ड के सबसे बड़े न्यायाधिकारी बने और पीछे से भारत के भाग्य-विधाता बड़े लाट भी। जहाज में मुर्गियों और अंडों की रखवाली करने वाला एक मैला-कुचैला बद-सूरत छोकरा एक दिन सारे इंग्लैण्ड की न्याय-तुला तोलेगा और ३३ करोड़ भारतियों का भाग्य-विधायक होगा; यह किसी को भी विश्वास न था परन्तु पुरुषार्थ ने वह सिद्ध कर दिया जिसे कोई विश्वास भी न कर सकता था।

मन्त्र

इस मन्त्र में किसी व्यक्ति-विशेष को नमस्कार नहीं किया गया है; किसी खास नाम को नमस्कार नहीं किया गया है; परन्तु गुण को नमस्कार किया गया है। सच्ची पूजा तो आदर्श-पूजा ही है उसी आदर्श-पूजा को यह मन्त्र सिखाता है; उपदेश करता है और स्वयं भी आदर्श पूजा रूप ही है। आदर्श-पूजा में जाति-पाँति, छोटा- ड़ा या लिंग भेद को स्थान नहीं होता। इस मन्त्र में भी इस प्रकार का कोई कैसा भी भेद-भाव दिखाई नहीं देता। जो कोई भी भक्त हो वह स्त्री हो या पुरुष, राजा हो या रंक, ब्राह्मण हो या शूद्र, विद्वान हो या मूर्ख-मन्त्र में उल्लिखित ५ परमपदों में से किसी एक को भी प्राप्त कर लेता है उसी का समावेश इस मन्त्र में होता है और उसको नमस्कार किया जाता है। जैनधर्म का यह मन्त्र सार है और यह मन्त्र आदर्श-पूजा का पाठ

सिखाता है इससे मालूम होता है कि जैनधर्म में आदर्श-पूजा को ही महत्व दिया गया है अन्य प्रकार की पूजाओं को नहीं।

सत्य

ज्ञान चारित्रयोर्मूलं सत्यमेव वदन्ति ये।
धात्री पवित्री क्रियते तेषां चरण रेणुभिः॥
अलीकं योन भाषन्ते सत्यव्रत महाधनाः।
ना पराध्धुमलं तेभ्यो भूत प्रेतो रगादयः॥१॥

भावार्थ—जो मनुष्य ज्ञान एवं चरित्र के मूल रूप इस सत्य को बोलते हैं उन मनुष्यों के पैरों की धूलि से यह पृथ्वी पवित्र होती है। जो पुरुष असत्य नहीं बोलते हैं वे सत्यव्रत रूपी महा धन से धनी हैं और ऐसे पुरुषों को भूत-प्रेत या सर्पादिक कोई किसी भी प्रकार से हानि पहुँचाने में समर्थ नहीं हैं।

पुरुषार्थ

पेट सब भरते हैं; सभी कोई धनोपार्जन करने के प्रयत्न करते हैं; सुख सभी चाहते हैं और दुःख से डरते हैं। कीर्ति सब को चाहिये और अपकीर्ति से सब घृणा करते हैं; अपने परिवार की वृद्धि और उसकी सुख समृद्धि सब चाहते हैं और उनकी अवनति से घबड़ाते हैं—इत्यादिक सामान्य प्रवृत्तियां हैं जो प्रत्येक मनुष्य के हृदय एवं उसके कार्यों में सदैव रहती हैं परन्तु उनका पालन एवं अनुशीलन प्रत्येक व्यक्ति अपनी २ योग्यतानुसार करता है। जन-साधारण जब अनुकूल प्रसंगों में प्रसन्न और प्रतिकूल प्रसंगों में खिन्न दिखाई देते हैं ऐसे प्रसंगों में सच्चा पुरुषार्थी अपनी शान्त अवस्था में ही बना रहता है। सुख और उसके साधन मिलने पर वह खिलखिला नहीं उठता और प्रतिकूल प्रसंगों एवं दुःखों की घटनायें उसके मुख को म्लान नहीं करतीं। गम्भीर समुद्र भी चंद्रोदय

और उसके अन्त के कारण से बढ़ता-घटता रहता है। ऐसी दशा में सत्य पुरुषार्थी का हृदय सुख दुःख के कैसे भी अनुकूल समयों पर समान रहता है। अहा! ऐसे पुरुषार्थी के हृदय की गम्भीरता समुद्र की गम्भीरता से भी कहीं अधिक बढ़-चढ़ कर है। प्रत्यक्ष में अपने एवं परोपकार के लिये धनोपार्जन करने में जो व्यक्ति पूर्णतया मशगूल रहने एवं तरह २ के आकर्षणों में घिरे रहने पर भी जब चाहे तभी समस्त बाह्य प्रवृत्तियों से मन को संकोच कर स्वात्मानन्द में मग्न हो जाता है। वही पुरुष सच्चा पुरुषार्थी है और इसकी यह शक्ति ही सच्चा पुरुषार्थ है।

❀ परमेष्ठी महामन्त्र ❀

जैन सम्प्रदाय में परमेष्ठी महामंत्र के समान एक भी मंत्र नहीं है, तीनों सम्प्रदाय वाले यानी जैनीमात्र इसे भक्ति-पूर्वक मानते और जाप करते हैं। उभय लोक में सिद्धि देने वाला यह महामंत्र

है, इसकी महिमा अगम और अपार है। इसकी अनेक प्रकार की साधनायें हैं; अनेक अर्थ हैं; इसका तात्त्विक अर्थ विचित्र है और उसे समझने वाला भी कोई विरला है। हम यहां केवल एक ही पद का चित्र खींचते हैं :—

प्रथम पद में पहला अक्षर "ण" कार या "न" कार है यह तृतीय वा चतुर्थ वर्ग का अन्त्याक्षर है और तृतीय पुरुषार्थ से उत्तीर्ण कर चतुर्थ पुरुषार्थ का देने वाला है। द्वितीय अक्षर "म" कार "ओ" कार स्वर सहित है, यह पंचम गति का सूचक उद्धर्व गमन रूप में है इसीलिए प्रथम और द्वितीय वर्ण "नमः" की पल्लव संज्ञा है। तृतीय वर्ण "अ" कार यह त्रिलोक संपत्ति देने वाला ब्रह्म (आत्म) बीज है और चतुर्थ अक्षर "र" कार यह अग्नि बीज है। इस व्यंजनाक्षर में "ई" कार स्वर है यह मूल प्रकृति बीज है। पंचम वर्ण बिन्दु-युक्त "ह" कार है यह नभ बीज है।

षष्ठम अक्षर "त" कार "आ" कार स्वर सहित है यह तारक बीज है और सातवां अक्षर "ण" कार बिन्दुयुक्त है यही इस प्रथम पद का प्रथमाक्षर है। यह आद्य अन्त सूचक वर्ण है। इस प्रकार परमेष्ठी महामंत्र के प्रथम पद में ('नमो अरिहंताणं') ये सात अक्षर हैं वे पल्लव, ब्रह्म, प्रकृति, अग्नि, नभ, तारक और परब्रह्म इस प्रकार सात बीजाक्षर रूप हैं। बीज कोश या मंत्र कोश में इस प्रकार की इन अक्षरों की संज्ञा बतलाई गई है। इन सात अक्षरों की शक्ति, गुण, धर्म और प्रभाव-सूचक तात्त्विक अर्थ मंत्र शास्त्र की दृष्टि से ऐसा होता है अर्थात् पल्लवपराग-युक्त जो आत्मा प्रकृति के साथ द्वन्द्व युद्ध में ज्ञानाग्नि द्वारा कर्मों को भस्म कर उद्र्ध्व गमन शक्ति प्राप्त करता है और अन्या-न्यों को बतला सकता है ऐसा तारक मोक्षबीज-रूप एवं गुणविशिष्ट महापुरुष हो वही अर्हन् परमात्मा होता है। ऐसे स्वरूप का ध्यान करने वाला ध्याता ध्येय स्वरूप प्राप्त कर उर्ध्व गमन करने का

अधिकारी हो सकता है, यह तात्त्विक अर्थ है। इस महा-मंत्र को आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी और पश्चानुपूर्वी लोम-विलोम जपने से नाना सिद्धियां प्राप्त हो सकती हैं। इन ७ अक्षरों में अनेक अद्भुत शक्तियाँ हैं; गुरुगम बिना समझना कठिनतर है। यह महा-मंत्र सब विद्याओं का सार है। ज्ञानावरणीय कर्म के विशिष्ट क्षय हो जाने पर ही पूर्णतया समझा जा सकता है। यह विषय गहन, तात्त्विक और अतीन्द्रिय है। विश्वास, धैर्य और श्रम से साध्य हो सकता है।

परमेष्ठी

परमेष्ठी महामन्त्र में पाँच देवों का वर्णन किया गया है, अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। इन्हें पश्चानुपूर्वी से क्रमशः उन्नत और श्रेष्ठ बतलाया गया है। साधना करने वाला साधु; श्रुतज्ञानी हो जाने से उपाध्याय और पूर्णतया द्वादशांगी को जान कर सिद्धियाँ प्राप्त कर चुका हो

वह आचार्य और अशरीरी सिद्ध तथा सर्वोत्कृष्ट पद-धारक अर्हन। यहाँ यह शंका हो सकती है कि पहले पद में सिद्ध क्यों नहीं? सिद्ध पद प्राप्त करने को ही अर्हन् आदि तप संयमादिक का अवलम्बन लेते हैं। इसका स्वाभा और सरल उत्तर यह है कि—केवल युक्त अर्हन देव का आत्मा सिद्ध सदृश ही पूर्ण विकाश में हैं एतदर्थ आत्मिक सुख तो सिद्धों के समान ही अरिहंतों में है किन्तु सिद्ध अशरीरी होने से स्वात्मानन्द में मग्न है और अरिहंत देहधारी होने से स्वात्मानन्द में मग्न होने पर भी संसार से पार पहुँचने का मार्ग भव्यों को बतलाते हैं इस लिये संसार के जीवों के लिये तारक अरिहंत ही है। इसी कारण से उपकार की दृष्टि से अरिहंत पद को प्रथम पद में रक्खा गया है। सशरीरी, अशरीरी दशा को त्याग कर ज्ञान दर्शन चरित्र की अपेक्षा से दोनों पद समान हैं, यों तो पांचों पद आध्यात्मदृष्ट्या एक अरिहंत में घट सकते हैं इन्हीं कारणों से इनका प्रथम पद

माना जाता है। संसार पर विजय प्राप्त कर निराबाध पद के प्रधान अधिकारी अरिहंत हैं।

साधु का कृष्ण वर्ण, उपाध्याय का हरित, आचार्य का पीत, सिद्ध का रक्त और अरिहंत का शुक्ल वर्ण (रंग) बतलाया गया है इसका यह कारण भी हो सकता है कि--साधु पद पर जब जीवात्मा पहुँचता है उस समय कर्ममल रूप कृष्ण कालिमा लगी रहती है उसे काट कर शुक्लत्व प्राप्त करता है इसलिये साधु पद का वर्ण कृष्ण माना गया है। इसी प्रकार उपाध्याय का वर्ण हरित यानी गाढ मल का नाश तथा आचार्य पद में उससे विशुद्ध उज्ज्वल यानी अल्पमल युक्त होने से पीत वर्ण माना है एवं विशुद्धतर और विशुद्धतम उज्ज्वल अरिहंत इस लिये माने गये हैं कि— घातक चतुष्ट कर्मों का जिनके नाश हो गया है इस लिये उनका वर्ण निर्मल और उज्ज्वल श्वेत माना है। इन्हीं पाँचों वर्णों को सांख्य ने पांचों

तत्त्वों में घटाया है यह प्राकृतिक वर्णन है। सिद्धों का रक्त वर्ण इस लिये माना है कि—आत्मा तेजोमय है। यह कल्पना व्यावहारिक है। आध्यात्म दृष्ट्या तो आत्म स्वरूप वर्णातीत है। ये पांचों पद संसार में भव्यों के लिये तारक हैं।

परमेष्ठी महामन्त्र के नवपद हैं जिनमें आराध्य देव पांच हैं। अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पांच देव पांच वर्णों में माने गये हैं। शुक्ल, रक्त, पीत, हरित और कृष्ण। इन पांचों वर्णों में पांचों तत्त्वों का आविर्भाव हो जाता है। जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व प्राकृतिक विभूति स्वरूप त्रिजगत्व्यापक हैं। जड़ चेतन का सामुदायिक स्वरूप ही संसार है। इन्हीं पाच तत्त्वों के वर्णों से वर्णातीत हो जाना यही सिद्ध और मोक्ष दशा है।

सब मन्त्रों से परमेष्ठी महामंत्र की जो महत्ता गाई गई है इसका यह कारण है कि—यह निसर्गतः

फलदायी, प्रकृति सिद्ध महामन्त्र है। अन्यान्य कृत्रिम मंत्रों में यह शक्ति नहीं है इसके गुणों को दर्शाने वाले अनेक ग्रन्थ बने हुये हैं।

इसी प्रकार ब्राह्मण धर्म (वैदिक) में जो गायत्री मंत्र है जिसकी बड़ी महत्ता ब्राह्मण वर्ग में मानी जाती है। वह मन्त्र भी इसी परमेष्ठी महामन्त्र के महात्मस्वरूप एवं सूचक और पोषक है। इस लिये ब्राह्मण-धर्मानुसार उसका भी थोड़ा सा दिग्दर्शन यहां पर करा देना योग्य है।

ब्राह्मण धर्म में अनेक सम्प्रदाय हैं किन्तु गायत्री मन्त्र और वेद ग्रंथ सब सम्प्रदायों को मान्य है। यद्यपि अर्थों में परस्पर मतभेद अवश्य है किन्तु अभेद एवं आध्यात्मिक अर्थ सब का स्वीकार है। और इसी लिए गायत्री का आध्यात्मिक स्वरूप वाला अर्थ ही योग्य अर्थ माना जा सकता है। वह मन्त्र और अर्थ इस प्रकार है—

गायत्री मन्त्र

"ओं३ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।"

यह मंत्र ऋग्वेद के मंडल ३ सूक्त ६२ मंत्र १० पर है। वैसे ही यजुर्वेद अध्याय १६ मंत्र ३ और सामवेद अध्याय १३ खण्ड ४ प्र० ६ अर्थ ३ सूक्त १० और ऋचा २ पर यह मंत्र लिखा हुआ है अर्थात सब वेदों में यह मंत्र है।

इसी का संस्कृत में वैदिक आचार्यों ने प्रधान अर्थ इस प्रकार किया है कि—

"सवितुः सूर्यादे देवस्य प्रकाशमानस्य तत् भर्गः तत्पापानां भर्जन हेतुभूतं भर्गाख्यं तेजो गायत्र्याः स्वरूपं ओं ब्रह्म धीमहि ध्यायामः भूर्भुवः स्वः स्वर्ग मृत्यु पातालादिभिः

वरेण्यं, वरणीयमुपासनीयं वा यः यद्गायत्र्या स्वरूपं न अस्माकं धियः बुद्धीः प्राणाश्च कर्मणी वा प्रचोदयात् प्रेरयति—प्रेरयेत् स्व प्रकाशेनात्मज्ञानमुपदिशतीति भावः।"

हिन्दी भावार्थ—

(सवितुः) प्रकाशमान (देवस्य) देव के (वरेण्य) वर्णनीय वा उपासनीय (तत् भर्ग) उस तेज को (धीमहि) हम ध्यावें—ध्यान करें (यः) जो प्रकाश (नः) हमारी (धियः) बुद्धि को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करें। यह सरल अर्थ तैत्तरीय आरण्यक तथा सायणाचार्य के अर्थानुसार है। इससे हम इसका आशय समझना चाहें तो हिन्दी में गायत्री मंत्र का यह अर्थ है कि—

"स्वर्ग मृत्यु पाताल में, प्रकाशमान, ओंकार स्वरूप वर्णनीय और उपासनीय पाप तोड़ने वाले

तेज का हम ध्यान करें और वही हमारी बुद्धि को प्रेरणा कर रहा है।"

अब पाठक! विचार करें कि—प्रकाशमान, पापों का नाश करने वाला, ओंकार स्वरूप, तीन लोक में व्याप्त यह कौनसा देव है? सम्प्रदाय मतानुसार अर्थ किया जाय तब तो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, गणपति, बुद्ध वा अर्हन् आदि किसी देव को लेकर अर्थ कर लीजिये! किन्तु सरल अर्थ में विचार करें तो आत्म तेज ही ओंकार स्वरूप है वही पापों का नाश करने वाला वही प्रेरणा करने वाला है अतएव गायत्री महामंत्र किसी भी विशिष्ट देव की उपासना सूचक मंत्र नहीं है किन्तु इसमें सर्वमान्य आत्मतत्त्व की उपासना का वर्णन है और यह मंत्र अध्यात्मवाद की पुष्टि कर रहा है। पंचतत्त्वात्मक परमेष्ठी महामंत्र का इसके साथ समवाय सम्बन्ध है, गायत्री की महिमा वर्णन करते हुए बृहन्नील तन्त्र में लिखा है कि—

"परापरगुरुस्त्वं हि परमेष्ठिरहं गुरुः,
सर्वतंत्रेषु-मंत्रेषु, स्वयं प्रकृति-रूपिणी"

अर्थात् परमेष्ठी महामंत्र प्रकृतिजन्य मंत्र की महिमा नीलतंत्रकार कह रहा है। एवं पूने की चित्रशाला प्रेस में गायत्री की मूर्ति का जो चित्र तैयार किया गया है उसमें गायत्री के पाँच मुख उन्हीं पाँच रंगों में दिये हैं जो परमेष्ठी महामंत्र के पांच तत्त्वों के पाँच रंग हम पीछे दर्शा गये हैं, तब हम यह साहस के साथ कह सकते हैं कि—परमेष्ठी महामंत्र की ही महिमा गायत्री प्रकट कर रही है तथा यों कह दें तो भी कोई आपत्ति नहीं है कि—पंच परमेष्ठी महामंत्र और गायत्री महामंत्र एक ही वस्तुदर्शक मंत्र है। जो गायत्री वेदों की माता मानी जाती है और जिस नमस्कार मंत्र को चौदह पूर्वों का सार तथा सब विद्याओं का सार माना है इन दोनों महामन्त्रों के अर्थों में क्या कोई सत्यदर्शी भिन्नता बतला सकता है।

एकाग्रता

सीधे ढंग से नवकार का निरन्तर जाप करते रहने से मन अभ्यस्त हो जाता है और वह इधर उधर घूमता रहे तो भी जिह्वा से नवकार का जाप होता रहेगा। मन की चंचलता बड़ी विकट है। अच्छे से अच्छे पाठ को भी वह धूल में मिला देती है। पाठ करते हुए साधक का मन जब चचल हो उठता है इधर उधर के संसारी कार्यों में भागने दौड़ने लगता है। इसके लिये अनुपूर्वी को स्थान देते हैं। मन ही मन में गुणने के बजाय जबान से बोल कर गुणाने में भी चित्त स्थिर रहता है।

अनुपूर्वी।

जहाँ १ है वहां नमो अरिहंताणं बोलना।
जहाँ २ है वहां नमो सिद्धाणं बोलना।
जहाँ ३ है वहां नमो आयरियाणं बोलना।
जहाँ ४ है वहां उवज्झायाणं बोलना।
जहाँ ५ है वहां नमो लोएसव्वसाहूणं बोलना।

परम कल्याण मन्त्र



ॐकारं बिन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः॥

अर्थः—बिन्दु संयुक्त जो ॐ है, वह सब काम तथा मोक्ष देने वाला है। इससे योगी-जन इसी का ध्यान करते रहते हैं और इसी का वंदन (नमस्कार) किया करते हैं।

धर्मों में ॐकार का आदर।

(१) जैन धर्म

"जैनियों का महामन्त्र"

नवकार सूत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं (अशरीराणं)

नमो आय-रियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्व साहूणं (मुणीण)

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणंच सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं

ॐकार में पाँच परमेष्ठी हैं अर्थात् इसी में अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु हैं।

जैन मंत्रवेत्ता महात्मा पुरुषों के मतानुसार इस महान मंत्र का "अ अ आ उ म्" इन पांच आद्याक्षरों के संयोजन से प्रणवाक्षर (ॐ) का स्वरूप बना है अतएव इस मन्त्र का जप ध्यान करने से नमस्कार महामन्त्र का जप करने जितना ही फल प्राप्त होता है।

(२) हिन्दूधर्म

माण्डूक्य उपनिषद् में कहा है:—

यह भूत, भविष्यत, वर्तमान जो कुछ है सब ओंकार ही है और तीनों कालों की सीमा से जो बाहर है वह भी ओंकार ही है। खं० १। मन्त्र १।

मुण्डकोपनिषद् २। २। ६ में लिखा है:—

अंधेरे के समुद्र से पार उतरने के लिये आत्मा का "ओम" इस प्रकार ध्यान करो। तुम्हारा कल्याण होगा।

श्रीमद्भागवत् में लिखा है:—

हृद्यविच्छिन्नमाकारं घंटानादं विसीर्णवत।
प्राणेनोदीर्थ तत्राथ पुनः संवेशयेत स्वरम् ११।१४।३४

हृदय में घण्टनाद के समान ओंकार का अविछिन्न पद्म नालवत् (अखण्ड) उच्चारण करना चाहिये।

श्रीकृष्णजी गीता में कहते हैं:—

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥

ब्रह्मवेत्ता पुरुषों की विधिपूर्वक यज्ञ दान तपस्यादिक क्रियायें सदा ओम् पद उच्चारण करके होती हैं। इस प्रकार वेदों से लगा कर गीता और पुराणों तक ने ओम् के जप को ही सब से श्रेष्ठ बतलाया है।

अन्य धर्मों में ओम् का आदर।

"ओंकार निर्णय" नाम की पुस्तक में लिखा है कि मुसलमानों और क्रिस्तानों की प्रार्थना के अन्त में जो "आमीन" अंग्रेजी में 'Amen" शब्द लिखा है वह ओम शब्द का ही रूपान्तर है। मनुष्य जाति की जो शाखायें भारतवासी आर्यों से पृथक् होकर भिन्न २ देशों में जा बसी, वे बहुत काल व्यतीत हो जाने से इस परम परमात्मा के निज नाम को भूल गई और उसका

रूप कुछ का कुछ बना लिया। तैसे ही तिब्बत, चीन, जापान आदि देशों में प्रचलित बौद्ध धर्म का परम पवित्र मंत्र है:—

ओं मनी पद्मो होम।

अर्थात् हृदय कमल में ओम् रूप मणि है। कैसा सरल और सुहावना मन्त्र है।

जप विधि

परमात्मा के नाम का स्मरण गरीब और धनवान, बाल, जवान और वृद्ध, सुखी और दुःखी, सभी जीव कर सकते हैं। जिनको समय कम मिलता हो वे चलते, फिरते सोते, बैठते और काम काज करते हुये भी प्रभु का स्मरण कर सकते हैं। वस्त्र या शरीर शुद्ध न हो, तो भी होठ न हिलें, इस प्रकार मन में जप करने में कोई हानि नहीं है, चलने का कार्य पैर का है, उस समय भी यदि मन को जप के काम में लगाया जावे तो भी जप हो सकता है। रेल या जहाज में भी जप कर सकते

हैं। बिछौने पर सोते २ निद्रा न आवे तब तक जप हो सकता है और अगर जप करते २ निद्रा आ जावे तो स्वप्न भी अच्छे आते हैं। तात्पर्य यह है कि किसी समय और किसी भी जगह रह कर जप करने में हर्ज नहीं है।

ओंकार के जप को गायन का रूप दे दिया जाये तो अति उत्तम है। युक्ति पूर्वक भजन के साथ ही मनोरञ्जन मी होता है।

वह गायन यह है:—

ओम ओम् ओम् ओम ओम् ओम् ओम्
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्
भज मन ओम् ओम् ओम् ओम् ओम्

इससे एक ही समय में चौबीस बार ओम् का जाप होता है और गीत के नाद से मन सदा सर्वदा आनन्द से नृत्य करता रहता है।

[भजन १]

मन मेरो ओंकार भजो रे ।। टेक ।।

प्रातःकाल उठ शुद्ध बदन ह्वै चित्त एकाग्र करो रे ।
ईश्वर सच्चिदानन्द रूप में, नित तुम ध्यान धरो रे ।।
मन मेरो ओंकार भजो रे ।।१।।

करि संध्या जप महामन्त्र को, बुद्धि विमल करो रे ।
यथाशक्ति उपकार नित्य कर, जीवन सुफल करो रे ।।
मन मेरो ओंकार भजो रे ।।२।।

सब जीवन पर कृपा दृष्टि कर, हिंसा त्याग करो रे ।
माँस, मीन, मद, मुद्रा, मैथुन, पंचमकार तजो रे ।।
मन मेरो ओंकार भजो रे ।।३।।

किशोर बहुत दिन सोय बितायो, अब कछु चेत करो रे ।
कालकराल निकट आ पहुंच्यो, अब तो तनिक डरो रे ।।
मन मेरो ओंकार भजो रे ।।४।।

[२]

ओंकार उदार अगम्य अपार,
संसार में सार पदारथ नामी।
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप,
भयो सब ही सिर भूप सुधामी ॥
मंत्र में यन्त्र में ग्रंथ के पंथ में,
जाकुं कियो धुर अन्तरजामी।
पंचहि इष्ट बसै परमिष्ठ सदा,
ध्रमसी करै ताहि सलामी ॥१॥

धुन

(१)

जय श्री अर्हन्; सिद्ध अधिकार;
जय गणीवाचक; जय अनगार।

(२)

देव हमारा श्री अरि-हंत, गुरु हमारा त्यागी संत।

(३)

अधम उद्धारण श्री अरिहन्त,
पतित पावन भज भगवन्त।

(४)

सब से बढ़कर है नवकार, करता है भवसागर पार।

(५)

चौदह पूर्व का यह सार,
बारम्बार जपो नव-कार।

यह ध्वनियां बड़ी ही प्रभावोत्पादक हैं। आज के युग में इनको धुन कहते हैं और यह कीर्तन, जप में अधिक प्रयुक्त होती है।

लावणी

तर्ज:—त्रिभंगी छन्द······

मन्त्रो का मन्त्र नवकार मन्त्र, तंत्रों में तंत्र हरे दुख तन का। जो लेवे धार, हो पल में पार, कर दे उद्धार पापी जन का॥ टेक॥

पूर्वों का सार, शरण आधार, है गुण अपार, तारण तिरण। मंगलीक आप जयवंत जाप, दे सुख अमाप, कल्याण करण॥ मनोरथ दे पूर, चिन्ता चूर, कटे कर्म क्रूर, भव दुख भंजन। है यही रसान नाग दमन जान, पारस प्रधान.

करदे कंचन ॥ भाषे जिनेश, रटते हमेश, कटजा क्लेश उनके मन का ॥ १ ॥ द्रोपदी की भीर, आ हरी पीर, किये लम्बे चीर, महिमा तेरी। सुदर्शन सेठ, की सूली मेट, रखी श्रेष्ट पेठ, नहीं देर करी ॥ सुभद्रा नार, खोले द्वार, पुनः शिवकुमार, तापस केरी। दे सीता आवाज, रख परमेष्ठी लाज, मिटे अगन आज, हुआ जल फेरी। सोमा सवेर, नककार फेर, झड़ गया जहर, खुश हो गनका ॥२॥ अंजना के प्रान, बचाये आन, सोम प्रभ दीवान की पति राखी। जिनदत्ता तास, की पूरी आश, फिर रिखबदास, के हुआ साखी अमर, कुमार. की करी सार, मेणरया नार दी बचा आखी। जल्से थे आग, नागन नाग, पारस वीतराग, की गति जांकी ॥ रूप खरा चोर, दी स्वर्ग ठोर, जटाऊ पत्ती ओर, किया टनका ॥ ३ ॥ सती चंदन बाला, की काटी जाल, और श्रीपाल, का जहाज तिरा। पद्म श्री को साज, दे मेटी दाज, फेर बच्छराज, का काज सरा ॥ दिया शरणा चार, युग बाहु कुमार,

हुआ देव अवतार, सुरताज धरा। कलावती के हाथ, कीने निपात, णमोकार ध्यात, दिया साज खरा, पद्मावती जान, धरा तेरा ध्यान, दिया ऊँचा स्थान, तापस बन का ॥ ४ ॥ नन्दवास ग्राम, से मगनीराम, आ सर्प हराम ने डंक दिया। मात तात, तिंबार. तेला को धार, फेरा णमोकार, दुःख बीत गया ॥ लक्ष्मीचन्द विख्यात, रामपुरे जात, बिच सिंह बदजात, से भेंट भया। गिन के नवकार मारी ललकार, सिंह भगा जिंवार, निज काज किया ॥ टेकचंद की नार, सर्प डंक मार, लिया निश्चय धार, हटा विष उनका ॥ ५ ॥ फिर रंगूजो सती, की राखी रती, माता ने कथा कानों से सुनी। मगनीराम उजार, थी जोखम लार, मिले चोर चार, बचा आखी अनी ॥ ऐसे पंचम काल, काटे कई के जाल, करदे निहाल, है तूहीं धनी। गुरु हीरालाल, मेरे दयाल, को नित्य खुशहाल, रख दिव्य गुनी ॥ चौथमल छन्द, कथे कड़ी बन्द, करदे आनन्द, शिष्य वर्धन का ॥ ६ ॥

'नवकार महात्म्य'

आगे चौबीसी हुई अनन्ति, होशे बार अनन्त।
नवकार तणी कोई आदि न जाणे, इम भाखे अरिहंत।
नवलाख जपतां नरक निवारे, पामें भवनोपार।
अशुभ कर्म के हरण को, मन्त्र बड़ो नवकार।
अड़सठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान।
वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान।
एकज अक्षर एकज चीत, समर्यां संपनि थाय।
संचित सागर सात ना, पातक दुर पलाय।
सकल मंत्र शिर मुकुटमणी, सद् गुरु भाषित सार।
सो भवियां मन शुद्ध सूं नित जपिये नवकार।

नवकार गणवाना फलना छप्पा

नित्य गणे नवकार, सुख संपदा ते पामे।
नित्य गणे नवकार, दुःख दालिद्र ते वामे।
नित्य गणे नवकार, जश महिमा जुग बाधे।
नित्य गणे नवकार, सुरगति ते साधे।

नित्य नवकार गणनार ने, आफत कदी आवे नहीं।
बाला छगन एम कहे, ते मोक्ष धाम पावे सही ॥१॥



जैन व अजैनों में बांटने के लिये सस्ती पुस्तकें

[एक प्रति).। ३५ का १) सैंकड़ा २॥)]

१. जैनधर्म क्या है ? २. जैनदर्शन जैनधर्म ३. गुण परिणामवाद ४. अहिंसा ५. आत्म-हित संग्रह ६ शील का १६ कड़ा।

[एक प्रति)॥ २५ का १) सैंकड़ा ३॥)]

१. जैन सिद्धान्त, २. मुक्ति का स्वरूप ३. जैनधर्म की विशेषतायें, ४. धर्म रत्न पाने योग्य कौन ?, ५. जैनधर्म का सिद्धान्तिक स्वरूप, ६. भारत का भावी राष्ट्रीय धर्म, ७. जैनधर्म की खूबियें, ८. जैनधर्म में सत्य ज्ञान की कुंजी, ६. कल्याण सामग्री।

[एक प्रति -)॥ १२ का १)]

१. श्राविका-धर्म दर्पण २. शान्तिसुधा, ३. स्याद्वाद की सार्थकता, ४. विद्यार्थी युवक भावना, ५. भावना-संग्रह, ६. विद्यार्थी प्रार्थनायें।

अजैन विद्वानों की सम्मतियाँ भाग १ -) १८ का १) रु०, धर्म का डंका ≈). आत्म-जागृति ≡), जैन स्तुति-संग्रह ≡)॥, मंत्र-सत्य-पुरुषार्थ ≡)॥, विधवा सती का चरित्र ≡)॥, जम्बू स्वामी चरित्र ।≈)

इन कुल पुस्तकों का १८०० पृष्ठों का नमूने का सेट २॥)

क्षमापना व दीपावली पत्रिका— ।) सैंकड़ा

जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय,

छतरी महादेवजी, ब्यावर

गृहस्थ-जीवन के लिये उपयोगी पुस्तकें

(१) नारी-धर्म पृष्ठ ६४ मूल्य -)॥ १२ का १) रु०

मातायें और बहनें इस पुस्तक से अतुल लाभ उठा सकती हैं। चरित्र विकाश के लिये ऐसी पुस्तक को मुफ्त बाँटना चाहिये।

(२) कल्याण-सामग्री पृष्ठ ३२ मू०)।।। २५ का १)

परम कल्याण मन्त्र ओंकार का स्वरूप, जप-विधि, समाज-सेवा के तत्त्व, मेरी भावना, स्काउट के नियम, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक स्वास्थ्य।

(३) विधवा सती का उत्कृष्ट चरित्र—

पृष्ठ १२० मूल्य ≡)।। ५ का १) रु०

(४) विद्यार्थी युवक भावना मू० -)।। १२ का १)

विद्या अभ्यास के समय से ही बालक में जीवन विकास के संस्कार दृढ़ होते हैं। हरेक माता-पिता को इसे अपने पुत्रों को अवश्य पढ़ाना चाहिये।

(५) भावना संग्रह मूल्य -)।। १२ का १) रु०

"या दृश्य-भावना ता दृश्य-सिद्धी" जैसी भावना होती है वैसी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

(६) सफलता के तीन साधन अर्थात् मंत्र, सत्य, पुरुषार्थ—के साधन मे साधक, सुख, शांति और समृद्धिशाली बन जाता है।

मूल्य ≡)।। ५ का १) रु०

(७) व्यापार शिक्षा मूल्य ‒)॥ १२ का १) रु०

व्यापार की सफलता के सिद्धान्त, व्यापार नीति प्रमाणिकता, व्योपारी का व्यवहार, बातचीत, फर्म का व्यवस्थित कार्य, कर्मचारी से व्यवहार, कार्य करने की रीति, व्यापार शिक्षा, पूंजी, बहीखाता, चिट्ठी-पत्री आदि ४३ विषयों का संग्रह "व्यापार वास्ते लक्ष्मी" नौकरी का मिलना दुश्वार है व्यपार से ही लक्ष्मी बढ़ती है। इस पुस्तक को पढ़कर मालामाल होइये।

(८) शान्ति सुधा मूल्य ‒)॥ १२ का १) रु०

अनन्त चिन्ताओं से दूर कर हृदय में शान्ति दिलाने वाली पुस्तक।

कुंवर मोतीलाल रांका अर्जीनवीस

मैनेजर—

सुख साधन भण्डार, ब्यावर

Beawar (Rajputana)